दूध तलाई : दूध तलाई पिछोला के दक्षिण–पूर्व में स्थित एक छोटी झील है। यह पिछोला के साथ जुड़ी हुई है और वहीं इसके जल का मुख्य स्रोत है। इसका जल स्तर पिछोला के साथ घटता–बढ़ता है। त्रिकोणीय समूह में सुरम्य दूध तलाई एक ओर पिछोला झील, दूसरी ओर माणिक्यलाल वर्मा उद्यान एवं तीसरी ओर पं. दीनदयाल उपाध्याय पार्क से घिरी हुई है। यह बहुत ही आकर्षक एवं मनोहर लगती है। वर्षा ऋतु में इसकी भव्यता एवं सुन्दरता देखते ही बनती है। रोप–वे के ट्रोले में बैठकर इस झील का अत्यन्त मनोरम एवं सुरम्य दृश्य देखने को मिलता है। ऊंची पहाड़ियों से इस झील और शहर को रात्रि में देखना और अधिक रोचक है।

राजकीय गौशाला तलाई, पिछोला के बड़ी पाल के दक्षिण की ओर एवं पूर्वी विस्तार के रूप में झील के एक छोटे फैलाव, जो कि माछला मगरा के पश्चिमी ढाल तक सटा हुआ है, का अनूठा नाम है अर्थात् 'दूध का छोटा तालाब'। इसके विषय में अलग–अलग कहानियाँ प्रचलित हैं। परन्तु बुजुर्गों की यह बात तथ्यात्मक प्रतीत होती है कि यह जल स्रोत शाही रसोड़ा (रसोई) को दूध की आपूर्ति करने वाली शाही गौशाला की गायों की जरूरतें पूरी करता था। बाद में डेयरी को गोवर्द्धन विलास स्थानान्तरित कर दिया गया, जहाँ से पशुओं को रोज यहाँ रास्ते में चराते हुए पानी पिलाने, नहलाने आदि के लिए लाया जाता था। दूध तलाई अपने छोटे, व्यवस्थित आकार और बहुत सारे आकर्षणों के कारण भ्रमण की दृष्टि से बहुत लोकप्रिय है। आखातीज पर उदयपुर का स्थापना दिवस, नव वर्ष आदि समारोह के साथ–साथ यहाँ विभिन्न सामाजिक कार्यक्रम भी आयोजित होते हैं।

इसके पास ही माछला मगरा के नीचे पश्चिमी ढ़लान पर एक खूबसूरत पार्क है, जो 'माणिक्यलाल वर्मा पार्क' के नाम से जाना जाता है। माणिक्यलाल वर्मा 1949 में भारत की संविधान सभा के सदस्य थे तथा पूर्व संयुक्त राजस्थान के मुख्यमंत्री भी रहे।

दूध तलाई के दक्षिण–पश्चिम में स्थित एक दूसरी पहाड़ी पर दीनदयाल उपाध्याय पार्क विकसित है, जो कि भारतीय जनता पार्टी के पूर्ववर्ती राजनैतिक दल भारतीय जनसंघ के पुरोधा पं. दीनदयाल उपाध्याय के नाम पर है। पं. दीनदयाल एक महान् चिंतक एवं संगठनकर्त्ता थे।

दूध तलाई के अन्य प्रमुख आकर्षण माछला मगरा और उस पर स्थित करणीमाता मंदिर के लिए रोप–वे, रामपोल के लिए ट्रेकिंग, दूधतलाई में पैडल बोट तथा पिछोला के किनारे हॉर्स सफारी आदि भी हैं। माछला मगरा की मध्य ऊँचाई पर पुरानी 'ओदी' (शूटिंग बॉक्स) देखा जा सकता है और एकदम ऊपर एकलिंगगढ़ किले पर रोप–वे से भी पहुँचा जा सकता है।

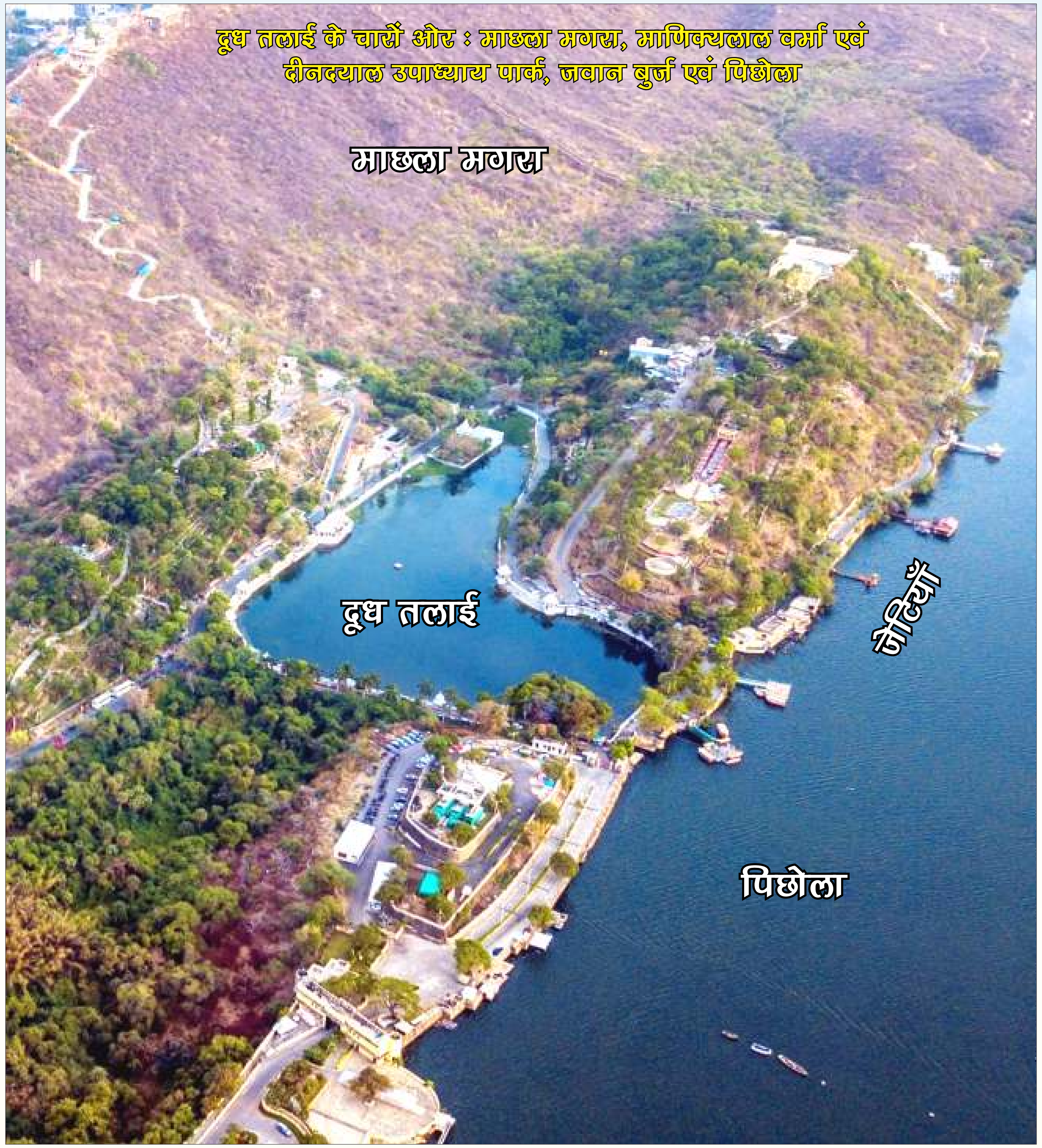
दूध तलाई के चारों ओर : माछला मगरा, माणिक्यलाल वर्मा एवं दीनदयाल उपाध्याय पार्क, जवान बुर्ज एवं पिछोला

दूध तलाई पूर्वी किनारे से : संपूर्ण दूध तलाई, दीनदयाल उपाध्याय पार्क एवं पृष्ठभूमि में पिछोला

संपूर्ण दूध तलाई

संपूर्ण दूध तलाई : संध्या वेला

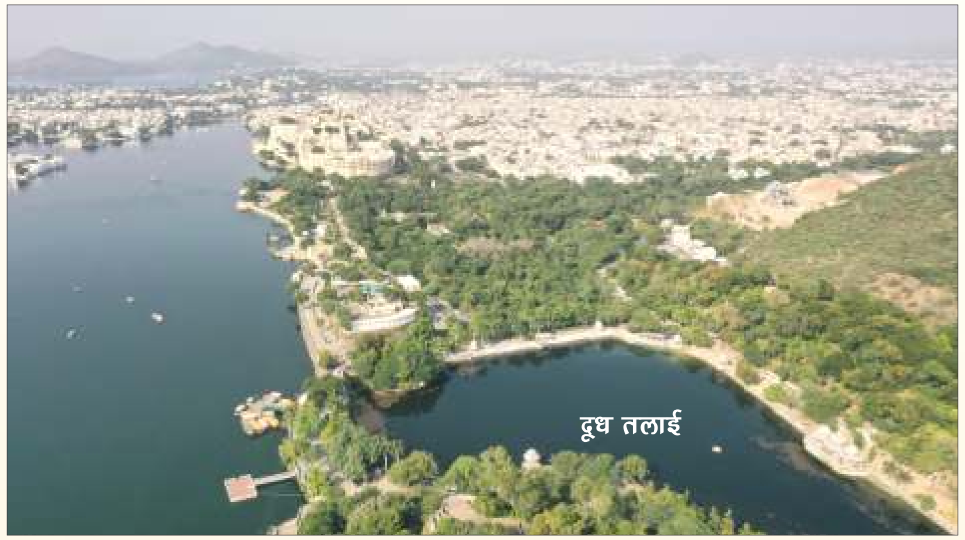

दूध तलाई परिसर उदयपुर का सुन्दरतम् पर्यटक स्थल है। इस परिसर में दूध तलाई जिसके चारों ओर पर्यटकों के भ्रमण हेतु व्यवस्थित सड़क है। ऊंचाई पर इसके एक तरफ माणिक्यलाल वर्मा पार्क, तो दूसरी तरफ दीनदयाल उपाध्याय पार्क एवं तीसरी तरफ पिछोला झील एवं इसकी बड़ी पाल पर सुन्दर उद्यान स्थित है। दीनदयाल उपाध्याय पार्क के समीप रोप–वे संरचना है, जहां से पर्यटक आसानी से करणीमाता मन्दिर एवं उसके समीप स्थित ऐतिहासिक एकलिंगगढ़ का भ्रमण करने जा सकते हैं। करणीमाता मन्दिर परिसर से पिछोला की विशालता एवं उसके समीप स्थित राजमहल, ताज लेक पैलेस, जग मन्दिर एवं अन्य ऐतिहासिक स्थलों का भव्य स्वरूप देखा जा सकता है। साथ ही उदयपुर का विहंगम् स्वरूप भी देखने का अवसर प्राप्त होता है।

दूध तलाई का पूर्वी किनारा एवं माणिक्यवाल वर्मा पार्क

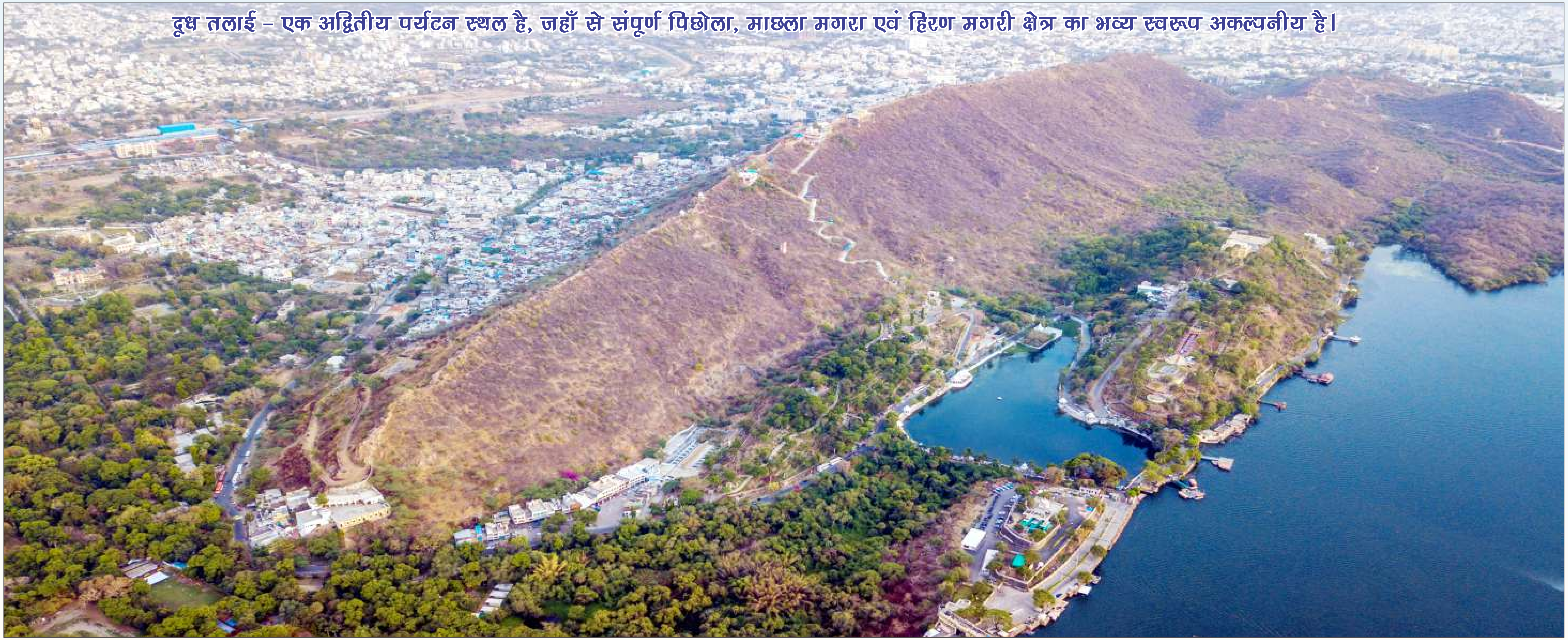

दूध तलाई – एक अद्वितीय पर्यटन स्थल है, जहाँ से संपूर्ण पिछोला, माछला मगरा एवं हिरण मगरी क्षेत्र का भव्य स्वरूप अकल्पनीय है।

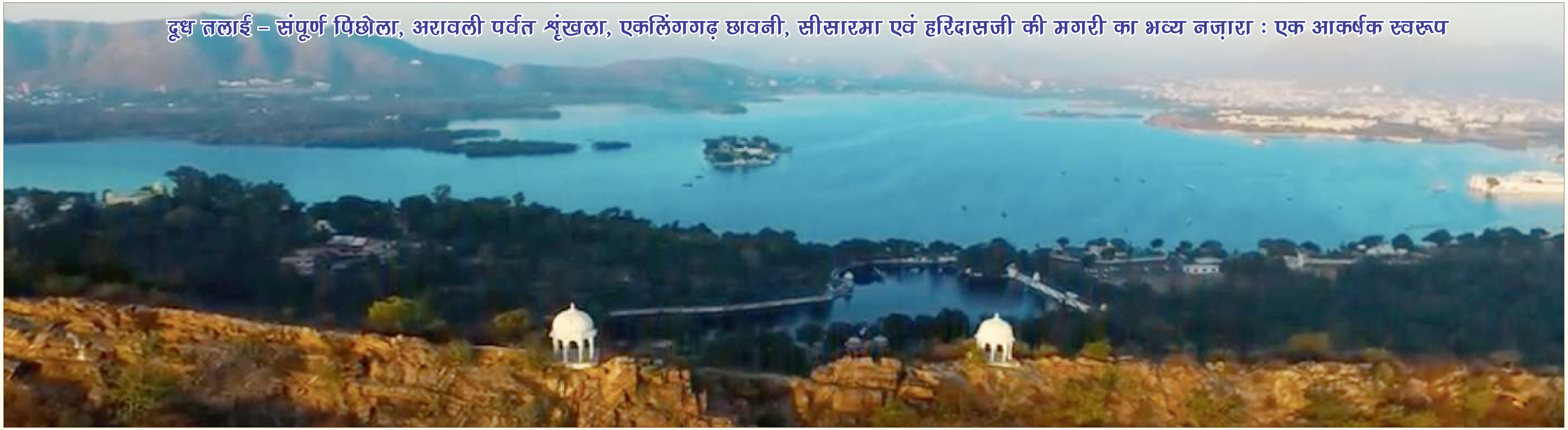

दूध तलाई – संपूर्ण पिछोला, अरावली पर्वत श्रृंखला, एकलिंगगढ़ छावनी, सीसारमा एवं हरिदासजी की मगरी का भव्य नज़ारा : एक आकर्षक स्वरूप

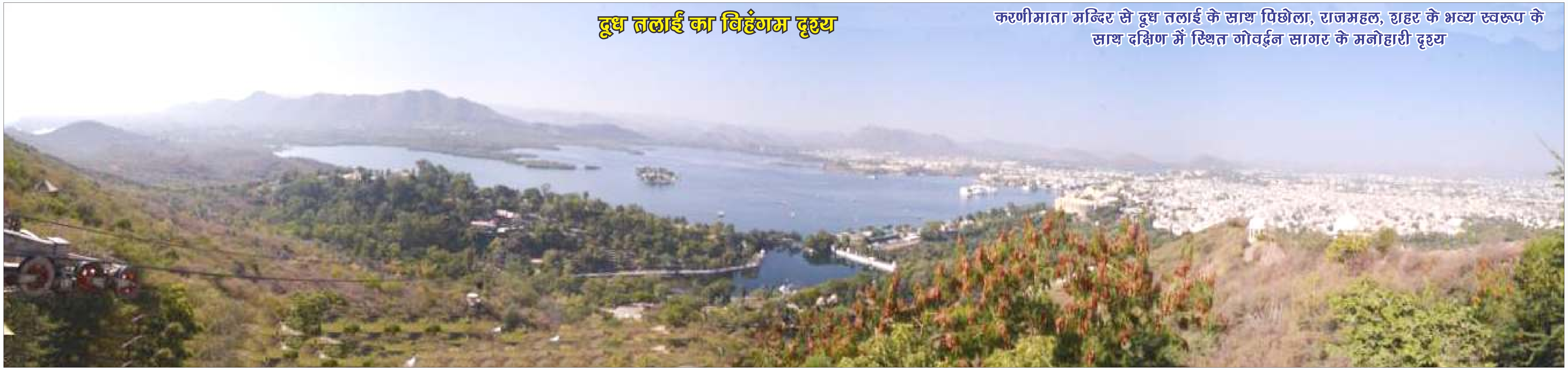

दूध तलाई का विहंगम दृश्य

करणीमाता मन्दिर से दूध तलाई के साथ पिछोला, राजमहल, शहर के भव्य स्वरूप के साथ दक्षिण में स्थित गोवर्द्धन सागर के मनोहारी दृश्य

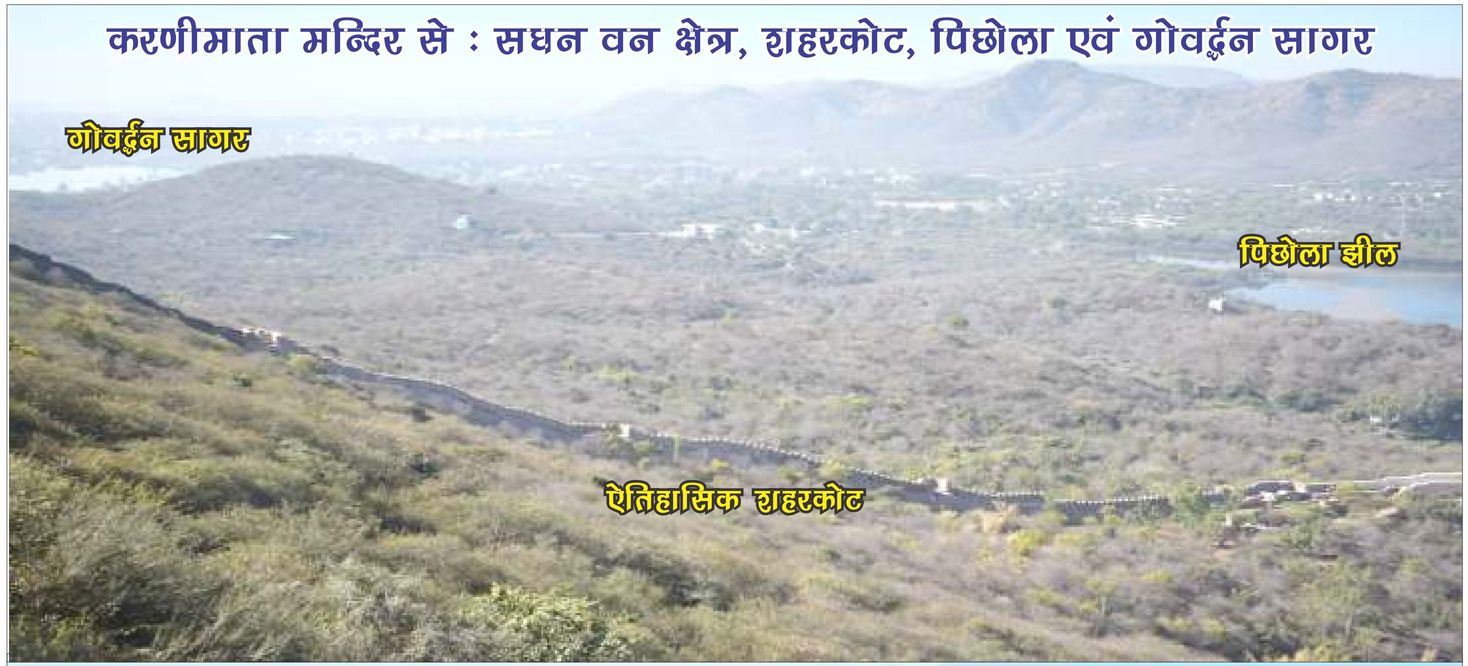

करणीमाता मन्दिर से : सघन वन क्षेत्र, शहरकोट, पिछोला एवं गोवर्द्धन सागर

गोवर्द्धन सागर
पिछोला झील
ऐतिहासिक शहरकोट

दूध तलाई : संध्याकालीन मनोहारी दृश्य

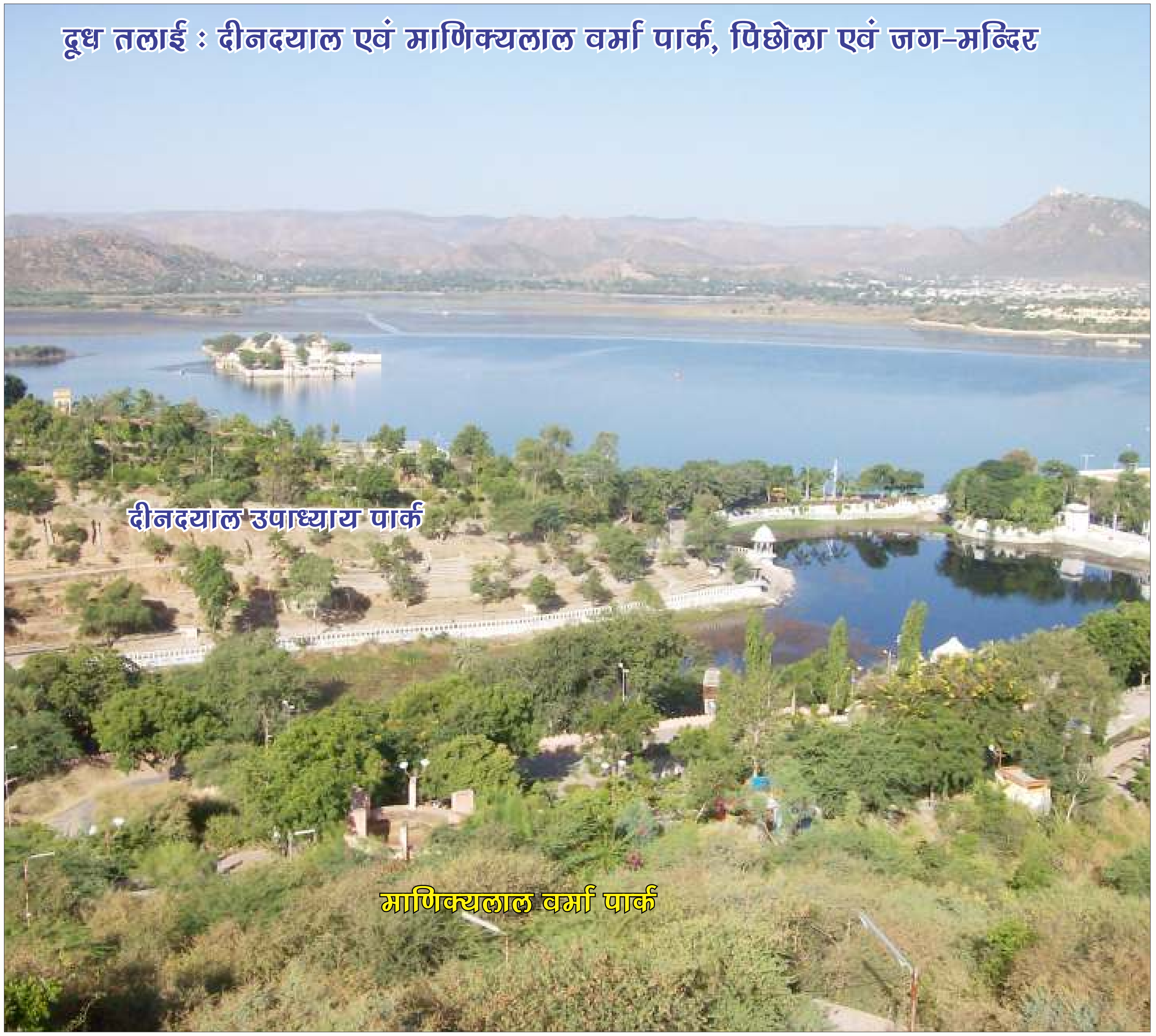

दूध तलाई : दीनदयाल एवं माणिक्यलाल वर्मा पार्क, पिछोला एवं जग-मन्दिर

दीनदयाल उपाध्याय पार्क
माणिक्यलाल वर्मा पार्क

दूध तलाई : रात्रिकालीन मनोहारी दृश्यावली

दूध तलाई की पाल का जगमगाता पूर्वी छोर

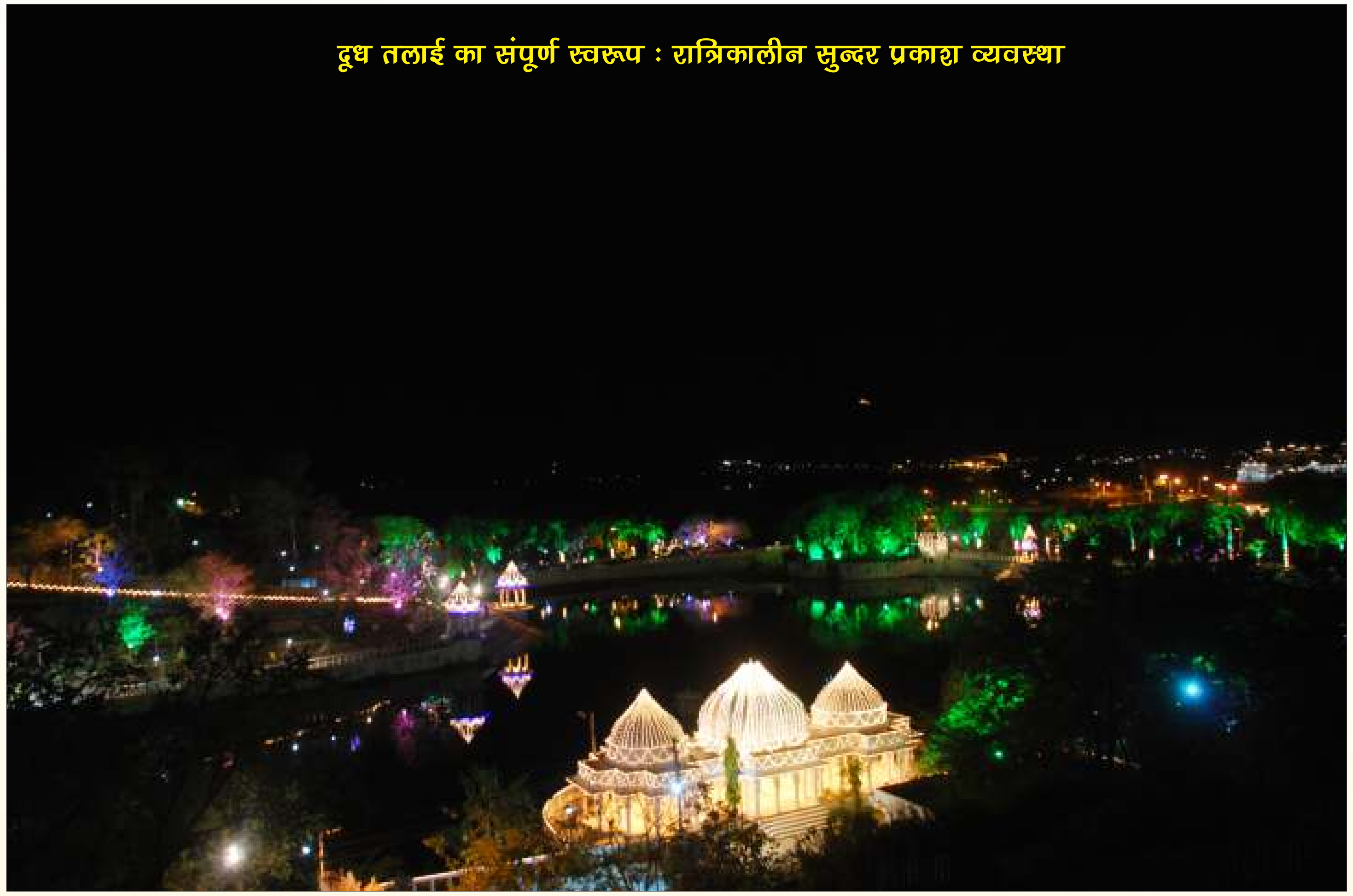
दूध तलाई का संपूर्ण स्वरूप : रात्रिकालीन सुन्दर प्रकाश व्यवस्था

दूध तलाई – पूर्वी पाल पर स्थित छतरियों पर सुन्दर प्रकाश व्यवस्था

दूध तलाई – पश्चिमी छोर पर स्थित मुख्य छतरी : रात्रिकाल में पानी में परिलक्षित प्रतिबिम्ब का अद्वितीय स्वरूप

पं. दीनदयाल उपाध्याय पार्क में स्थित म्यूजिकल फाउण्टेन के साथ पिछोला का सुन्दर नजारा

दीनदयाल उपाध्याय पार्क : देश के ख्यातिप्राप्त अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, इतिहासकार एवं पत्रकार पं. दीनदयाल उपाध्याय की स्मृति में पिछोला के पूर्वी छोर एवं दूध तलाई के दक्षिण–पश्चिम में ऊँची पहाड़ी पर दीनदयाल उपाध्याय पार्क का निर्माण नगर विकास प्रन्यास, उदयपुर द्वारा वर्ष 2004 में किया गया।

इस पार्क की विशेषता यह है कि पहाड़ी के प्राकृतिक स्वरूप का पूर्ण उपयोग करते हुए पहाड़ी के दक्षिण–उत्तरी ढलान पर बहुत सुन्दर ढलान युक्त फव्वारा एवं इसके सबसे निचले स्थान पर म्यूजिकल फाउन्टेन बनाया गया है, जिसका प्रतिदिन शो होता है। इसकी पहाड़ी के पूर्व एवं पश्चिमी ढलान पर बेन्च टेरेस बनाकर इसमें सुन्दर झाड़ीनुमा पौधें एवं वृक्ष लगाये गये हैं। पार्क के शीर्ष से नीचे तक सीढ़ियाँ भी बनाई गई है, जिनके माध्यम से पर्यटक एवं शहरवासी पार्क से दूध तलाई तक आ–जा सकते हैं। इस पार्क के पूर्वी ढलान पर स्थापित रोप–वे के माध्यम से करणीमाता मन्दिर तक पहुंचा जा सकता है। इस पार्क के दक्षिणी छोर पर जलदाय विभाग का जल शुद्धीकरण संयंत्र स्थापित है। पार्क बहुत सुन्दर एवं रमणीक है। इसमें प्रवेश न्यूनतम प्रवेश शुल्क से संभव है। हाल ही में यहां पर दो जीपलाइन माणिक्यलाल वर्मा पार्क तक विकसित की गई हैं। यहाँ से जग–मन्दिर, जग–निवास, पिछोला एवं सूर्यास्त का सुन्दर दृश्य बहुत ही मनोहारी होता है।

श्री उपाध्याय जी ने एक विचारक के रूप में देश में एक विशिष्ट पहचान बनाई। उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के गठन में महत्त्वपूर्ण भागीदारी निभाई और भारतीय जनसंघ वर्तमान भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष भी बने। उन्होंने लोकतंत्र की अवधारणा को सरलता से स्वीकार किया लेकिन पश्चिमी धर्म–निरपेक्षता और पश्चिमी लोकतंत्र का आँख बन्द कर समर्थन का विरोध किया। उन्होंने अपना जीवन लोकतंत्र को शक्तिशाली बनाने और जनता की बातों को आगे रखने में लगा दिया। उनका जन्म 25 सितम्बर, 1916 को उत्तरप्रदेश के नगला, चन्दमान मथुरा में एक प्रतिष्ठित हिन्दू परिवार में हुआ था। विलक्षण प्रतिभा के धनी श्री उपाध्याय ने स्नातक की शिक्षा पूरी करने के पश्चात् सिविल सेवा की परीक्षा पास की लेकिन आम जनता की सेवा की खातिर उन्होंने इसका परित्याग कर दिया। वे अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों से ही समाज सेवा के प्रति अत्यधिक समर्पित थे। वर्ष 1937 में कॉलेज के दिनों में वे कानपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साथ जुड़े। वहां उन्होंने उसके संस्थापक डॉ. हेडगेवार से परामर्श कर न नौकरी की, न ही विवाह किया बल्कि संघ को अपने जीवन की बागड़ोर समर्पित कर दी।

डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी द्वारा वर्ष 1951 में भारतीय जनसंघ की स्थापना कर उपाध्याय जी को प्रथम महासचिव नियुक्त किया गया। अपनी कुशल कार्यक्षमता एवं उसमें परिपूर्णता के गुणों के कारण वे दिसम्बर, 1967 तक महासचिव बने रहे। डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी इनके लिए गर्व से कहते थे ''यदि मेरे पास दो दीनदयाल हो तो मैं भारत का राजनीतिक चेहरा बदल सकता हूँ।''

मुख्य प्रवेश द्वार

विकसित पार्क

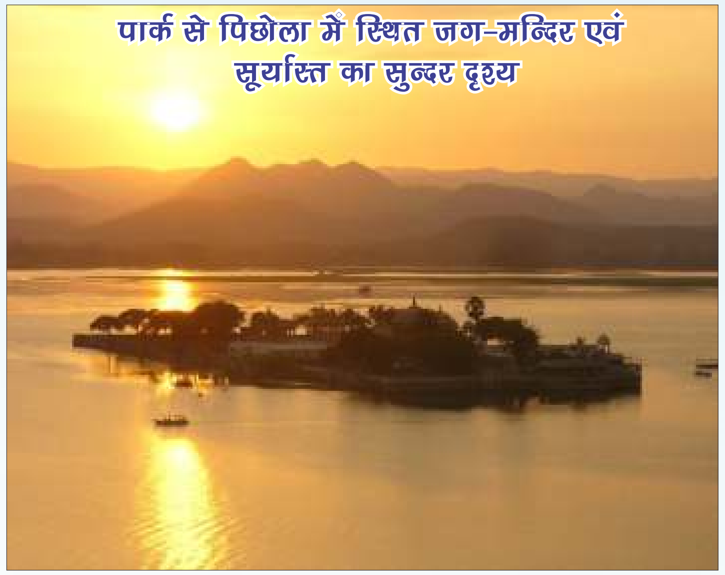

पार्क से पिछोला में स्थित जग-मन्दिर एवं सूर्यास्त का सुन्दर दृश्य

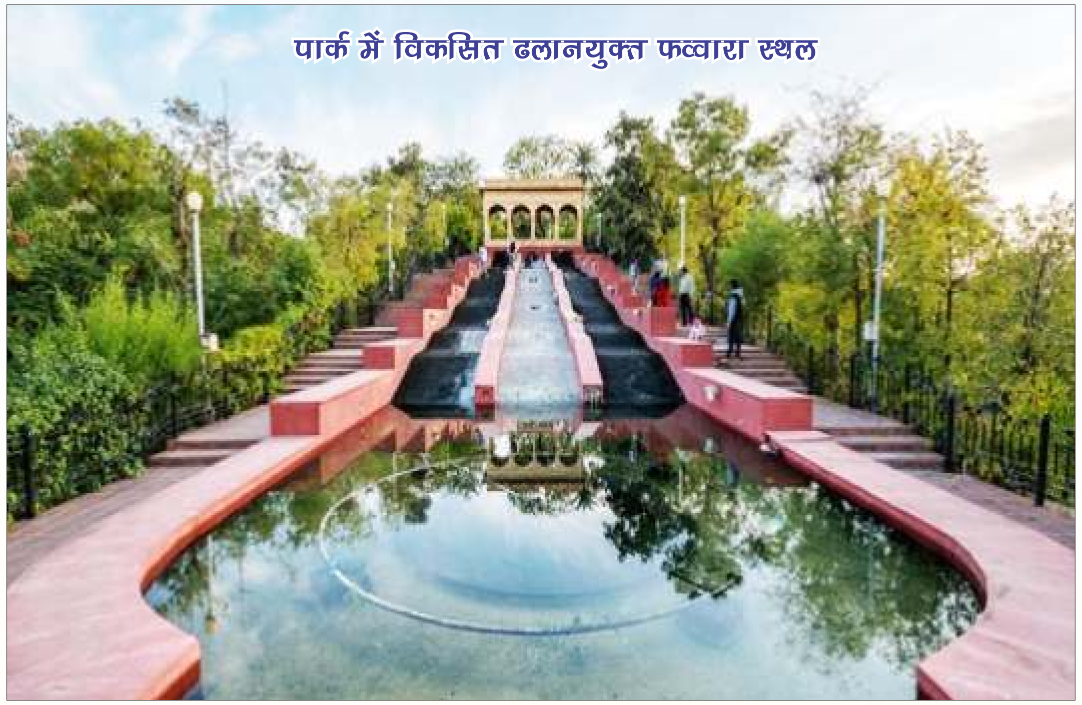

पार्क में विकसित ढलानयुक्त फव्वारा स्थल

पार्क में विकसित संगीतमय फव्वारा स्थल से वृहद् पिछोला झील एवं मानसूनी बादलों का मनोरम दृश्य

म्यूजिकल फव्वारा स्थल का संपूर्ण स्वरूप

पार्क का सुन्दर स्वरूप

अचानक वर्ष 1953 में डॉ. मुखर्जी के असमय निधन से पूरे संगठन की जिम्मेदारी उनके युवा कंधों पर आ गयी। उन्होंने लगभग 15 वर्षों तक महासचिव के रूप में जनसंघ की सेवा की तथा 19 दिसम्बर, 1967 को कालीकट में आयोजित 14वें वार्षिक अधिवेशन उन्हें जनसंघ का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। वे एक ख्यातिप्राप्त लेखक भी रहे। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने एक साप्ताहिक समाचार पत्र ''पांचजन्य'' और एक दैनिक समाचार पत्र ''स्वदेश'' शुरू किया था। उन्होंने नाटक ''चन्द्रगुप्त मौर्य'' और हिन्दी में ''शंकराचार्य की जीवनी'' लिखी। डॉ. हेडगेवार की जीवनी का मराठी से हिन्दी में अनुवाद किया। आपका अन्य प्रसिद्ध साहित्यिक कृतियों में ''सम्राट चन्द्रगुप्त'', ''जगत्गुरु शंकराचार्य'', ''अखण्ड भारत क्यों है'', ''राष्ट्र जीवन की समस्याएँ'', ''राष्ट्र चिंतन और राष्ट्र जीवन की दिशा'' आदि मुख्य हैं।

आपकी अवधारणा थी कि आजादी के बाद भारत के विकास का आधार भारतीय संस्कृति हो, न कि अंग्रेजों द्वारा छोड़ी गयी पश्चिमी विचारधारा। आपका विचार था कि कर्मचारियों और मजदूरों की शिकायतों के समाधान पर सरकार को ध्यान देना चाहिये एवं प्रत्येक व्यक्ति का सम्मान करना, प्रशासन का कर्त्तव्य है और लोकतंत्र अपनी अपनी सीमाओं से परे नहीं जाना चाहिये और जनता की राय को उनके विश्वास और धर्म के आलोक में सुनिश्चित करना चाहिये।

आप द्वारा स्थापित ''एकात्म मानववाद'' की अवधारणा पर राजनीतिक दर्शन भारतीय जनसंघ वर्तमान भारतीय जनता पार्टी सक्रिय है। आपके ''एकात्म मानववाद'' प्रत्येक मनुष्य के शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का एक एकीकृत कार्यक्रम है। आपका विचार था कि एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में भारत पश्चिमी अवधारणाओं जैसे व्यक्तिवाद, लोकतंत्र, समाजवाद, साम्यवाद और पूँजीवाद पर निर्भर नहीं हो सकता है। उनका विचार था कि भारतीय मेघा पश्चिमी सिद्धान्तों और विचारधाराओं से घुटन महसूस कर रही है। परिणामस्वरूप मौलिक भारतीय विचारधारा के विकास और विस्तार में बहुत बाधा आ रही है। 11 फरवरी, 1968 की सुबह मुगलसराय रेलवे स्टेशन पर दीनदयाल का निष्प्राण शरीर पाया गया। उनके असामयिक निधन से हमने एक राष्ट्रप्रेमी, प्रखर चिंतक एवं भविष्य के विकास पुरुष को खो दिया।

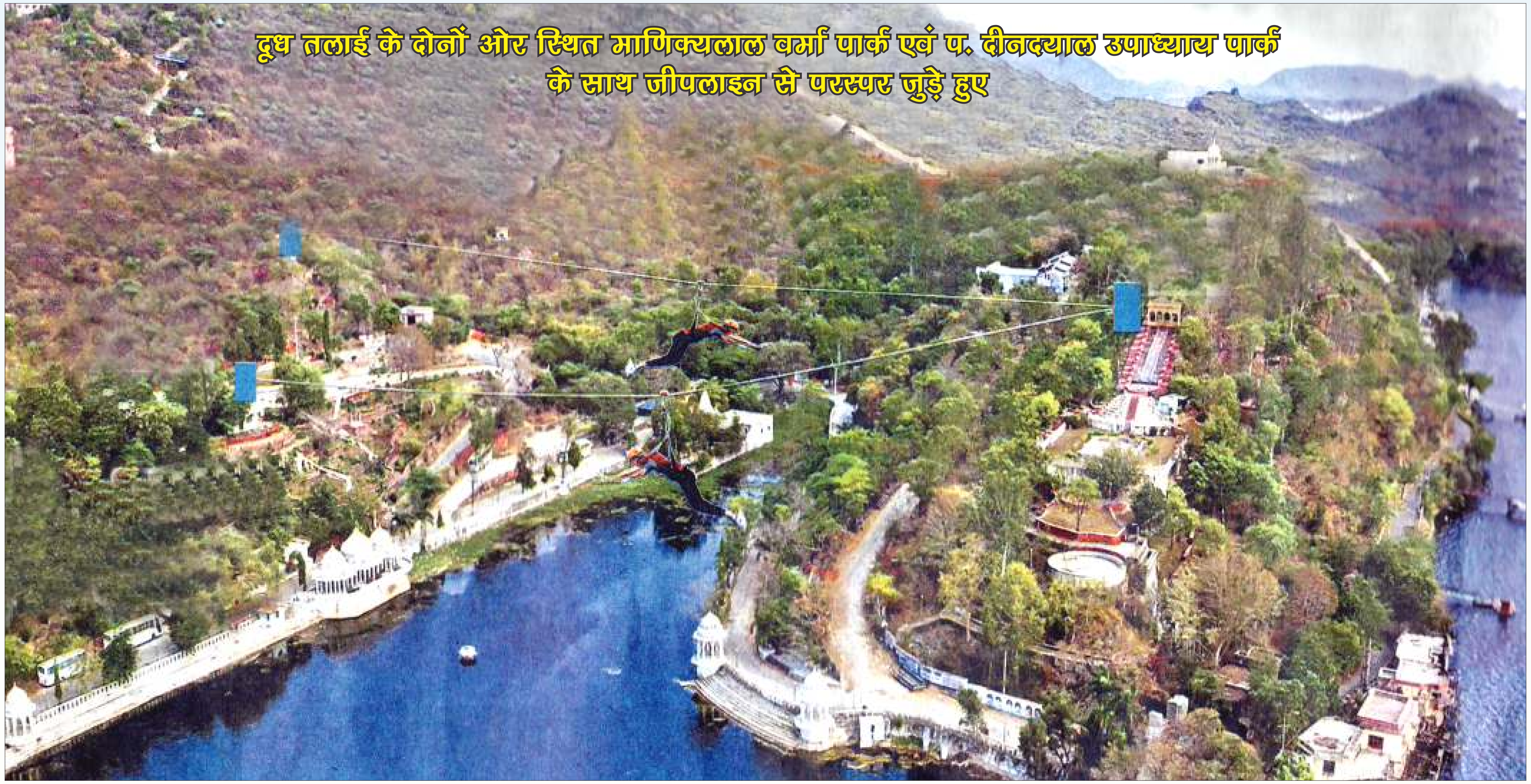
दूध तलाई के दोनों ओर स्थित माणिक्यलाल वर्मा पार्क एवं प. दीनदयाल उपाध्याय पार्क के साथ जीपलाइन से परस्पर जुड़े हुए

पं. दीनदयाल उपाध्याय पार्क से पिछोला की विस्तृत जल सतह, पश्चिमी छोर पर हरीतिमा लिए हुए अरावली की पहाड़ियाँ एवं झील के मध्य जग-मन्दिर एवं परिन्दों के पसन्दीदा स्थल छोटे टापू

करणीमाता मन्दिर : यह मन्दिर दूध तलाई के पृष्ठभाग में प्राकृतिक सौन्दर्य के बीच में माणिक्यलाल वर्मा एवं पं. दीनदयाल उपाध्याय पार्क के पास माछला मगरा के शीर्ष भाग पर श्री मंशापूर्णा करणीमाताजी का विशाल मन्दिर स्थित है। मन्दिर में माणिक्यलाल वर्मा पार्क से प्रारम्भ हुई सीढ़ियों तथा दीनदयाल उपाध्याय पार्क के पास स्थित 387 मीटर लम्बे रोप–वे के माध्यम से दशनार्थी एवं पर्यटक यहाँ पहुँचते हैं। रोप–वे के गान्डोला (केबिन) में बैठकर उदयपुर की समृद्धि और प्राकृतिक सुषमा का मनोहारी दृश्य देखा जा सकता है।

सन् 1620 से 1628 के मध्य महाराणा करणसिंह ने उदयपुर की सुरक्षा के लिए माछला मगरा पर एकलिंगगढ़ आवासीय क्षेत्र विकसित किया एवं उस दौरान करणीमाता मन्दिर का भी निर्माण किया गया। यद्यपि एक लम्बी अवधि तक मन्दिर जर्जर हो गया था एवं वर्ष 1997 में मंशापूर्णा करणीमाता विकास समिति ने इसका पुनर्निर्माण किया। यह मन्दिर एक हिन्दू महिला ऋषि करणीमाता को समर्पित है। शहर के उच्च बिन्दु पर स्थित होने के कारण यहाँ से विशाल पिछोला झील, दूध तलाई, लेक पैलेस, जग मन्दिर, राजमहल, बड़ी पाल एवं पृष्ठ भाग पर सज्जनगढ़ किले के मनोहारी दृश्य देखे जा सकते हैं। साथ ही पहाड़ियों की हरीतिमा से घिरा हुआ गोवर्द्धन सागर भी स्पष्ट दृष्टिगत होता है। यह स्थल एक प्राकृतिक, ताजा एवं स्वच्छ हवा के साथ शांति से भरपूर धार्मिक एवं विशिष्ट पर्यटन स्थल के रूप में अपनी पहचान बना रहा है। प्रचलित कथा के अनुसार करणीमाता का जन्म 1387 ईस्वी. में राजस्थान के जोधपुर जिले में फलौदी के पास स्थित गांव रैवेग में हुआ था। वह चारण परिवार की सातवीं बेटी के रूप में पैदा हुई एवं पुनर्जन्म सिद्धि के लिए माँ दुर्गा की साधना एवं पूजा की। ऐसा माना जाता है कि उसने अपने मृत बेटे की जिन्दगी को पुनर्जीवित किया, जो कि चूहे के रूप में बदल गया था और तब से उसके सभी रिश्तेदार मृत्यु के बाद चूहों के रूप में जन्म लेते हैं और परिवार के रूप में एक साथ रहते हैं। मन्दिर में सफेद चूहों को पवित्र माना जाता है तथा एक मान्यता के अनुसार उन्हें खिलाने से सौभाग्य प्राप्त होता है।

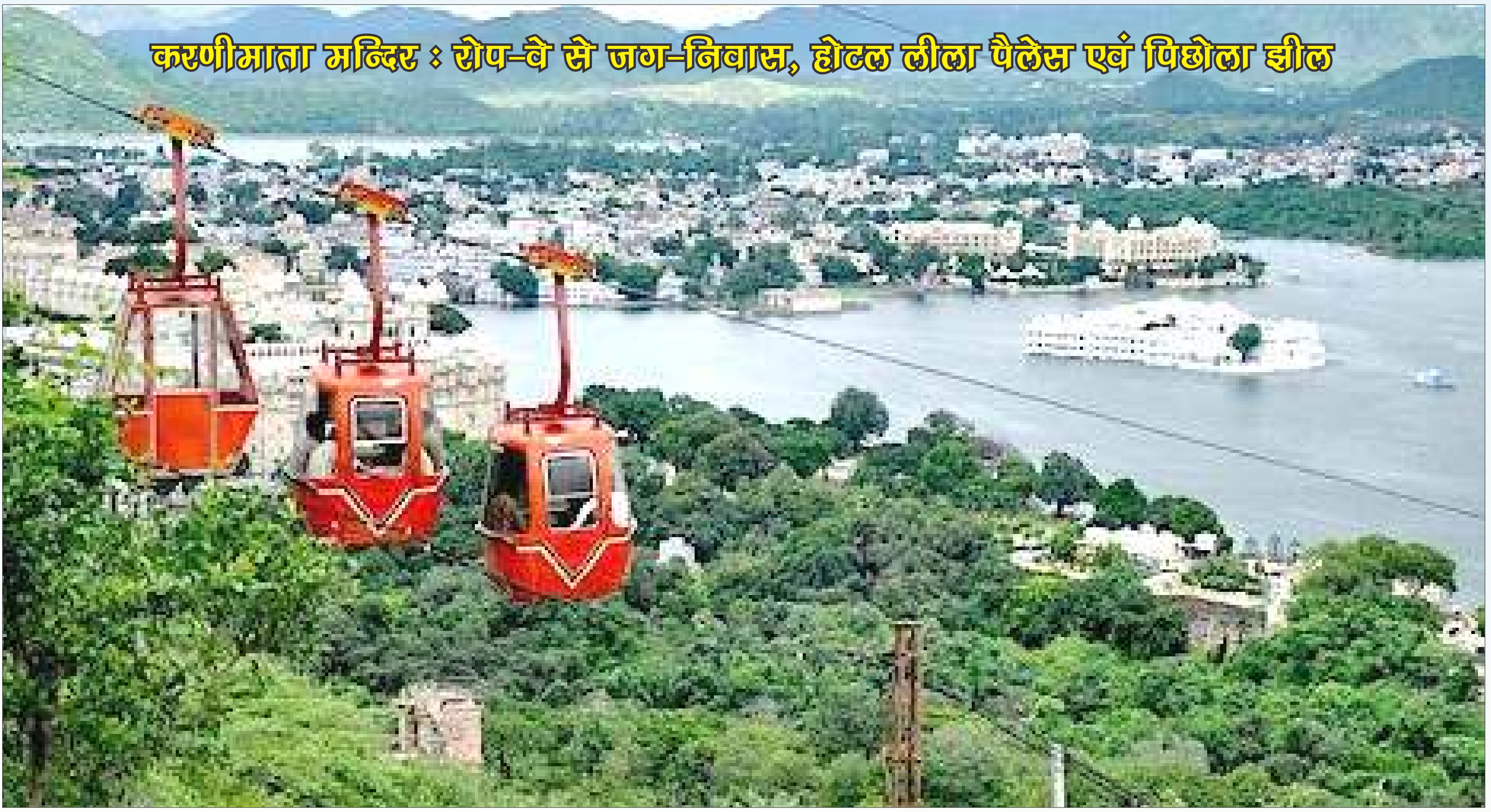
करणीमाता मन्दिर : रोप–वे से जग–निवास, होटल लीला पैलेस एवं पिछोला झील

करणीमाता मुख्य मन्दिर

करणीमाता मन्दिर : शहर का हिरण मगरी क्षेत्र

माछला मगरा से शहरकोट एवं ऐतिहासिक उदयपुर शहर

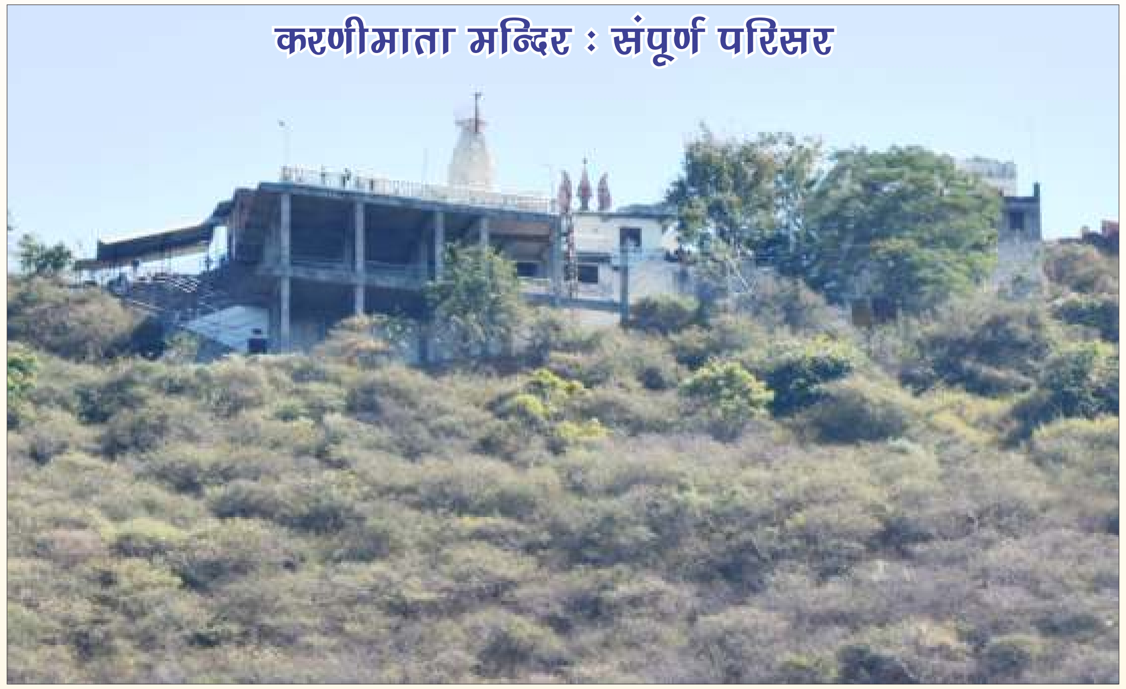
करणीमाता मन्दिर : संपूर्ण परिसर

करणीमाता मन्दिर में मौजूद पवित्र सफेद चूहे
© Scrapbook- A Travel Blog

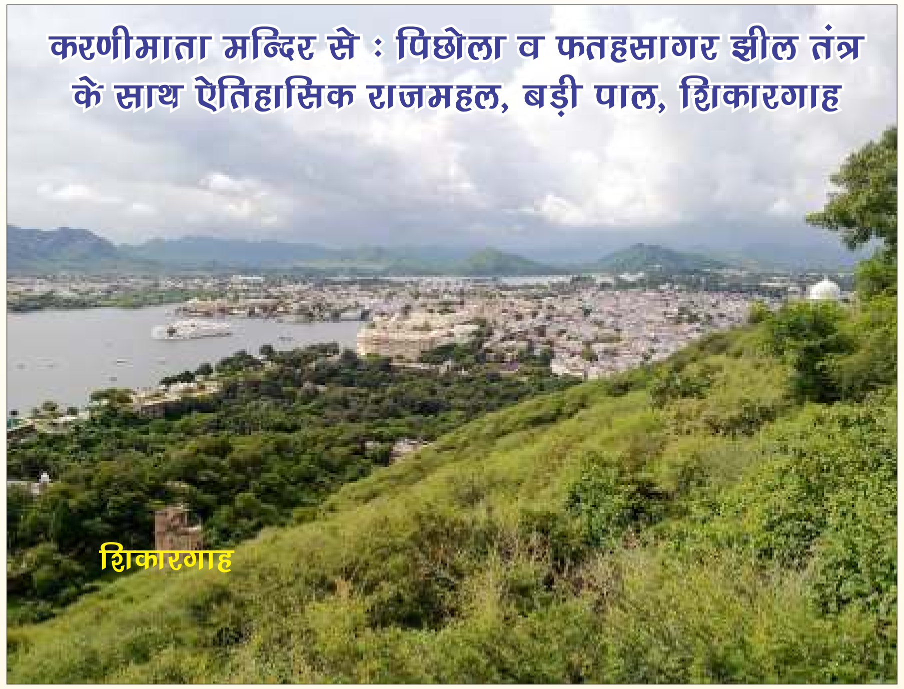
करणीमाता मन्दिर से : पिछोला व फतहसागर झील तंत्र के साथ ऐतिहासिक राजमहल, बड़ी पाल, शिकारगाह

माणिक्यलाल वर्मा पार्क : स्वतंत्रता सैनानी, किसान हितैषी, मेवाड़ प्रजामण्डल के संस्थापक एवं वृहत्त राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री श्री माणिक्यलाल वर्मा की स्मृति में उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को स्मरणांजली हेतु नगर निगम द्वारा इस पार्क का निर्माण वर्ष 1995 में किया गया। इसे सनसेट पॉइन्ट के रूप में भी विकसित किया गया था।

यह पार्क माछला मगरा के पश्चिमी ढलान पर दूध तलाई से कुछ ऊँचाई पर बना एक बहु–उद्देशीय पार्क है। यहाँ टेरेस पर लम्बे चौड़े लॉन के साथ सुन्दर पौधे, फूलदार क्यारियाँ, मध्य में बहता झरना, फव्वारें तथा किनारों पर स्थित छतरियाँ, चौकियाँ आदि देशी–विदेशी पर्यटकों एवं शहरवासियों में बहुत लोकप्रिय हैं। इसे जंगल सफारी का रूप देने के लिए शेर एवं सूअर की लड़ाई के दृश्य की संरचना के साथ बच्चों के मनोरंजन हेतु फिसल पट्टी, झूलें आदि लगाये गये हैं। पार्क के पास माछला मगरा के ऊपरी ढ़लान पर विरासत में मिली दो मंजिला ओदी की मरम्मत कर पर्यटकों के लिए इसे सुरक्षित बनाया गया है। इस पार्क में पिकनिक एवं सामाजिक आयोजन की पर्याप्त सुविधा के साथ समुचित पार्किंग व्यवस्था है।

इस पार्क से करणीमाता मन्दिर, उदयगढ़–एकलिंगगढ़, रामपोल हेरिटेज ट्रेक, ओदियाँ, रोप–वे आदि तक पहुँचने के लिए इसे केन्द्रीय स्थल मानते हुए पक्की–कच्ची पगडंडी एवं रास्ते बनाये गये हैं। इस पार्क से दूध तलाई तक के ढ़लान पर टेरेस बनाकर सुन्दर पौधें एवं मौसमी/वार्षिक फूलदार पौधे लगाये गये हैं। यहाँ घनी वृक्षावली भी विकसित की गई है।

दीनदयाल पार्क से करणीमाता मन्दिर तक बने रोप–वे के ट्रोले पर बैठकर पर्यटक माणिक्यलाल वर्मा पार्क की सुन्दर बनावट एवं नयन लुभावनी हरियाली को दृष्टिपात करते हुए गुजरते हैं। दीनदयाल पार्क से दो जीप लाइन (साहसिक खेल) के दो गंतव्य स्थान माणिक्यलाल वर्मा पार्क में बनाये गये हैं। इस सुविधा से दूध तलाई के पूर्व एवं पश्चिमी छोर पर बने पार्क आपस में जुड़ गये हैं।

श्री माणिक्यलाल वर्मा का जन्म वर्ष 1897 में बिजौलिया ठिकाने के एक कायस्थ परिवार में हुआ। शिक्षा पूर्ण कर वे बिजौलिया ठिकाने की नौकरी करने लगे लेकिन विजय सिंह पथिक की प्रेरणा से वे ठिकाने की नौकरी छोड़कर वर्ष 1919 एवं 1923 में 'बिजौलिया किसान आन्दोलन' में सक्रिय हुए। उन्होंने अपने वक्तव्यों एवं कविताओं द्वारा किसानों में जागृति पैदा की और कुछ समय तक इसका नेतृत्व किया। उन्होंने वर्ष 1934 में अजमेर से 7 मील दूर 'नारेगी' नामक एक छोटे से गांव में सेवाश्रम खोला, जिसका उद्देश्य रचनात्मक कार्यों के लिए कार्यकर्त्ताओं को तैयार करना था। इसके अतिरिक्त भीलों के उत्थान के लिए वे डूंगरपुर गये, जहाँ उन्होंने उनकी शिक्षा एवं विकास हेतु एक पाठशाला प्रारम्भ की।

वर्ष 1938 में वे मेवाड़ लौटे एवं उसी वर्ष हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया। यहां कांग्रेस ने देशी रियासतों के प्रति अपनी नीति की घोषणा की। उनके सक्रिय सहयोग से 24 अप्रैल, 1938 को मेवाड़ प्रजामंडल की स्थापना हुई एवं मेवाड़ राज्य में नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष छेड़ा। इसके कारण उनको मेवाड़ से निष्कासित कर दिया गया था। उन्होंने अजमेर से ''मेवाड़ का वर्तमान शासन'' नामक एक छोटी सी पुस्तिका प्रकाशित की जिससे मेवाड़ सरकार ने नाराज होकर 2 फरवरी, 1939 को देवली के निकट ऊँचा गाँव से उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

उन्होंने मेवाड़ प्रजामंडल के प्रतिनिधि के रूप में 8 अगस्त, 1942 को अखिल भारतीय कांग्रेस के ऐतिहासिक अधिवेशन में भाग लिया। उन्होंने उदयपुर पहुँचकर प्रजामंडल के कार्यकर्त्ताओं से विचार–विमर्श कर 24 घंटे के भीतर उदयपुर महाराणा को ब्रिटिश सरकार से सम्बन्ध विच्छेद करने या जन आन्दोलन का सामना करने की चेतावनी दे दी। मेवाड़ सरकार ने प्रजामंडल की कार्यकारिणी के सभी सदस्यों को गिरफ्तार कर माणिक्यलाल वर्मा पर चेतावनी वापस लेने का दबाव बनाया लेकिन उन्होंने इस चेतावनी को वापस लेने से इन्कार कर दिया। वे देश की स्वतंत्रता के लिए अहिंसक आन्दोलन प्रारम्भ कर मेवाड़ में विधानसभा एवं संविधान लागू करने के लिए सदैव संघर्षशील रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद श्री वर्मा वृहद् राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री बने। माणिक्यलाल वर्मा 1949 में भारत की संविधान सभा के सदस्य भी थे। वे पहली दो लोकसभा में (1952 में टोंक से एवं 1957 में चित्तौड़गढ़ से) सदस्य थे। वर्ष 1965 में उन्हें पद्म–भूषण अलंकरण से नवाजा गया। जीवन पर्यन्त लोगों की सेवा करते हुए 14 जनवरी, 1969 को उनका स्वर्गवास हो गया।

माणिक्यलाल वर्मा पार्क से दूध तलाई, पिछोला झील एवं राजमहल का सुहावना दृश्य

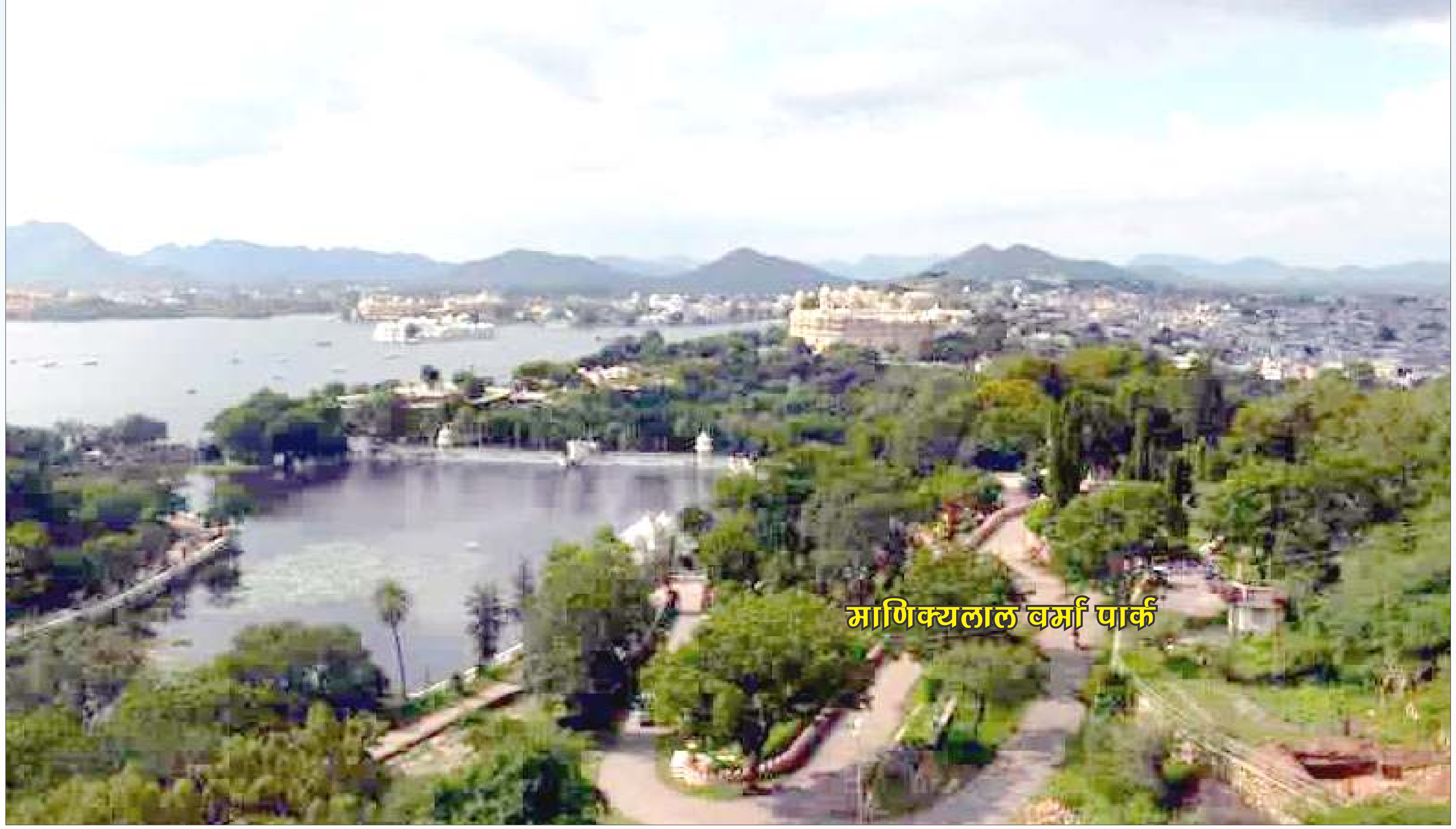

दूधतलाई एवं भव्य पिछोला परस्पर जुड़े हुए
सनसेट पॉइन्ट
सनसेट पॉइन्ट

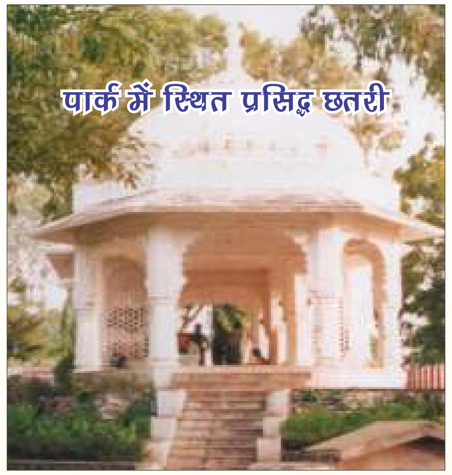
पार्क में स्थित प्रसिद्ध छतरी

कमल रूपी पेयजल प्याऊ

पार्क में शेर एवं सूअर की लड़ाई की संरचना

पार्क में निर्मित छोटे झरने के रूप में विकसित संरचना

पार्क में विश्राम स्थल के रूप में निर्मित सुन्दर छतरी

दूध तलाई आधुनिक स्वीमिंग पूल : पिछोला तंत्र की अति सुन्दर छोटी झील दूध तलाई को तैराकी हब के रूप में विकसित करना पर्यटकों एवं शहरवासियों के मनोरंजन एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से उचित होगा। इसके लिए निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देकर इसे बहुत व्यवस्थित एवं पूर्णता से एक आधुनिक स्वीमिंग पूल की तरह विकसित किया जाना चाहिये :–

1. झील की गहराई एक समान रखने के साथ इसे दलदल, झाड़ियों, जलकुंभी, काई, प्लास्टिक एवं पूजन सामग्री अवशेष आदि से मुक्त रखा जाना चाहिये।
2. दो से तीन तैरते हुए फव्वारें स्थापित कर नियमित रूप से संचालित करने से जल में ऑक्सीजन की पर्याप्त मात्रा रहेगी जिससे जलीय जीवों की संख्या में वृद्धि के साथ घुलनशील गन्दगी के ऑक्सीडेशन में तीव्रता आयेगी। पानी साफ एवं पारदर्शी बना रहेगा।
3. झील में सभी मौसम हेतु एक उपयुक्त आधुनिक एवं सुन्दर जेठी का निर्माण आवश्यक है।
4. झील को तैराकी के लिए उपयुक्त रखने हेतु एक स्तर तक झील सदैव भरी हुई रहनी चाहिये। इसके लिए आवश्यक जल पिछोला से पम्प किया जा सकता है।
5. झील के जल के शुद्धीकरण हेतु शुद्धीकरण यंत्र के साथ आवश्यकतानुसार रसायन का भी उपयोग करना चाहिये।
6. तैराकी सीखने वाले बच्चों की सुरक्षा के लिए प्रशिक्षक एवं गोताखोर की नियुक्ति की जानी चाहिये।
7. गर्मियों की छुट्टियों में इस झील पर नगर निगम की तरफ से बच्चों को तैराकी सिखाने के लिए विशेष प्रशिक्षण शिविर एवं विभिन्न प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जानी चाहिये।
8. संपूर्ण झील परिसर में पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था की जानी चाहिये जिससे रात्रिकाल में भी पर्यटक एवं शहरवासी तैराकी का भरपूर आनन्द ले सके।
9. तैराकी एवं तैराकी प्रशिक्षण हेतु रियायती शुल्क निर्धारित होना चाहिये।
10. इसके अतिरिक्त इस झील में पेडल एवं छोटी पाल युक्त नावों का ही संचालन हो, जिससे जल प्रदूषण की संभावना सीमित रहेगी।

दूध तलाई की स्थिति एवं आकार को देखते हुए इसे एक स्वीमिंग पूल के रूप में विकसित किया जाना चाहिये।

नव संवत्सर : भारतीय सांस्कृतिक जीवन का विक्रम सम्वत् से गहरा नाता है। भारतीय नववर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को मनाया जाता है। यह दिन हमारे मन में यह उद्घोष जगाता है कि हम पृथ्वी माता के पुत्र हैं एवं सूर्य, चन्द्र व नवग्रह हमारे आधार हैं। समस्त प्राणी हमारे पारिवारिक सदस्य हैं, तभी हमारी संस्कृति का बोध वाक्य ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की सार्थकता सिद्ध होती है।

विक्रम सम्वत् का सम्बन्ध किसी भी धर्म से न होकर सारे विश्व की प्रकृति, खगोल सिद्धान्त व ब्रह्माण्ड के ग्रहों व नक्षत्रों से हैं, इसलिए भारतीय काल गणना पथ निरपेक्ष होने के साथ सृष्टि की रचना व राष्ट्र की गौरवशाली परम्परा को दर्शाती है। इतना ही नहीं विश्व के सौरमण्डल के ग्रहों व नक्षत्रों की चाल व निरन्तर बदलती उनकी स्थिति पर भी हमारे दिन, महीने, साल और उनके सूक्ष्मतम् भाग पर आधारित है। आज भी हम हमारी संस्कृति के दैनिक व्रत, त्यौहार, धार्मिक अनुष्ठान उन्हीं तिथियों के आधार पर ही मनाते हैं।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था ''यदि हमें गौरव से जीने का भाव जगाना है और अपने अन्तर्मन में राष्ट्रभक्ति के बीज को पल्लवित करना है, तो राष्ट्रीय तिथियों का आश्रय लेना होगा।'' ब्रिटिश शासन के ईस्वी सम्वत् को अपना कर हम अपना गौरव खोते गये। हमारी सरकार को विक्रम संवत् को अपनाकर भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को पुनः स्थापित करना चाहिये।

दूध तलाई पर उदयपुर में नव संवत्सर का आयोजन :

- घरों में 'ओम' की पताका फहराकर 'नूतन वर्षाभिनंदन' विक्रम सम्वत् अंकित कर सुन्दर बैनर को चौराहों पर लगाया जाता है।
- दूध तलाई पर संध्या वेला पर सुन्दर दीप प्रज्ज्वलन कर उन्हें जल में प्रवाहित करते हैं।
- दूध तलाई को नव संवत्सर की पूर्व संध्या पर पूर्णतः प्रकाशमान कर पटाखों से नव वर्ष का स्वागत करते हैं।
- नव संवत्सर के दिन विभिन्न विद्यालयों के छात्र–छात्राओं द्वारा प्रातः वेला में शहर के लोगों को नीम की पत्ती, मिश्री तथा काली मिर्च भेंट कर तिलक लगा कर स्वागत कर शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं।
- शहर के विभिन्न विद्यालयों में पूर्व संध्या पर विशेष प्रार्थना सभाएं, गीत, प्रतियोगिताएं, संस्कृति पर आधारित चित्रादि एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

नव संवत्सर के स्वागत में
दूध तलाई पर की गई
आतिशबाजी को देखते शहरवासी।

नव संवत्सर – इतिहास के पृष्ठों से :

- चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य ने चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को आक्रमणकारियों को देश से बाहर खदेड़ कर समस्त भारत को एक राष्ट्र के रूप में पिरोकर विक्रम सम्वत् का शुभारम्भ किया।
- भारतीय नव वर्ष एवं नव संवत्सर का प्रथम दिन।
- ब्रह्माजी द्वारा सृष्टि की रचना भी इसी दिन की गई थी।
- नवरात्रि एवं शक्ति उपासना का प्रथम दिन।
- मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के राज्याभिषेक का दिन।
- महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा आर्य समाज की स्थापना का दिन।

गन्दगी के कारण पल्लवित अवांछित जलीय घास, काँटेदार पौधे, प्लास्टिक डिस्पोजल, प्लास्टिक थैलियों में एकत्रित कर डाली गई पूजन सामग्री, गन्दे कपड़े आदि दूध तलाई की सुन्दरता के लिए प्रतिकूल है – नियमित सफाई का अभाव।

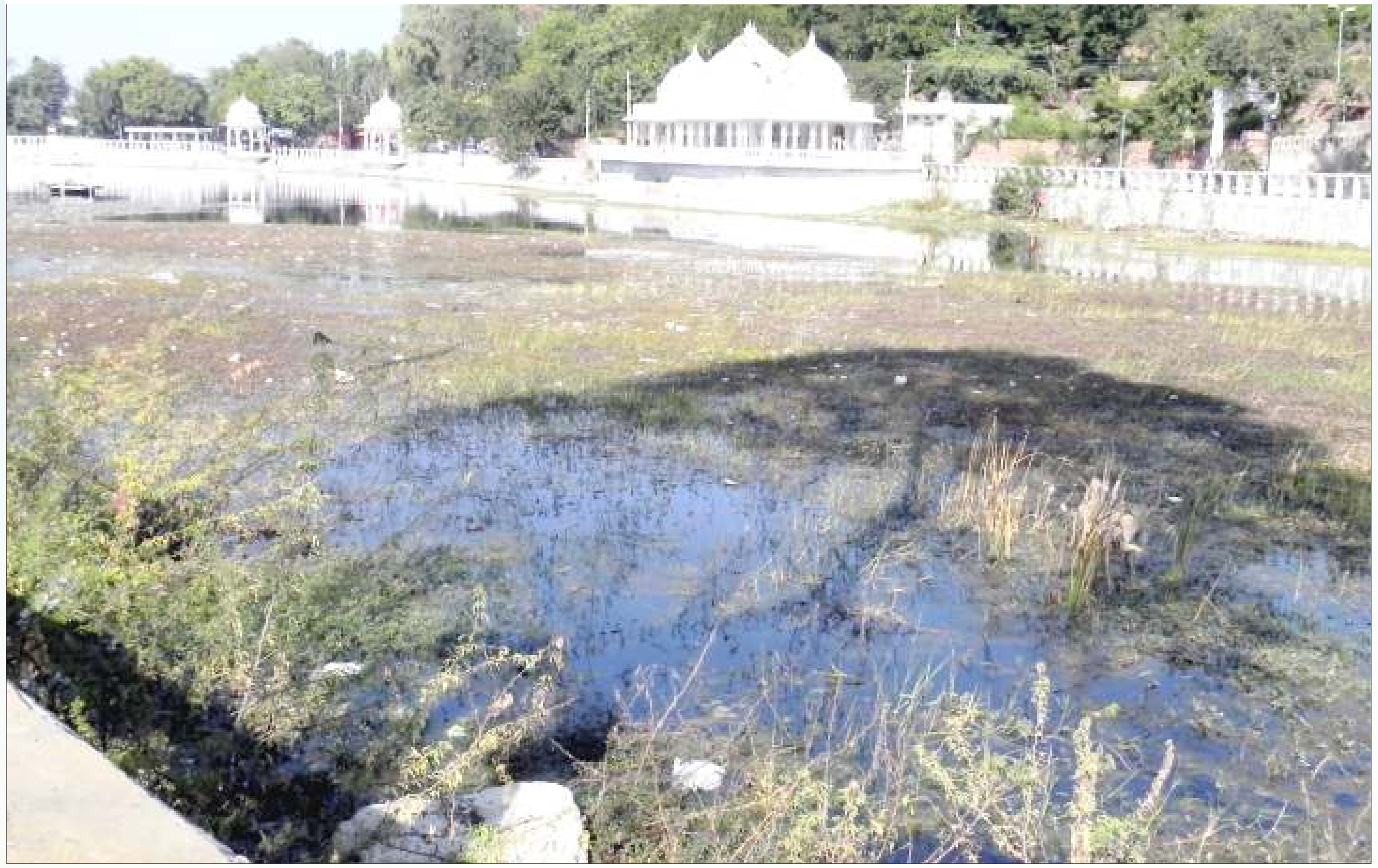

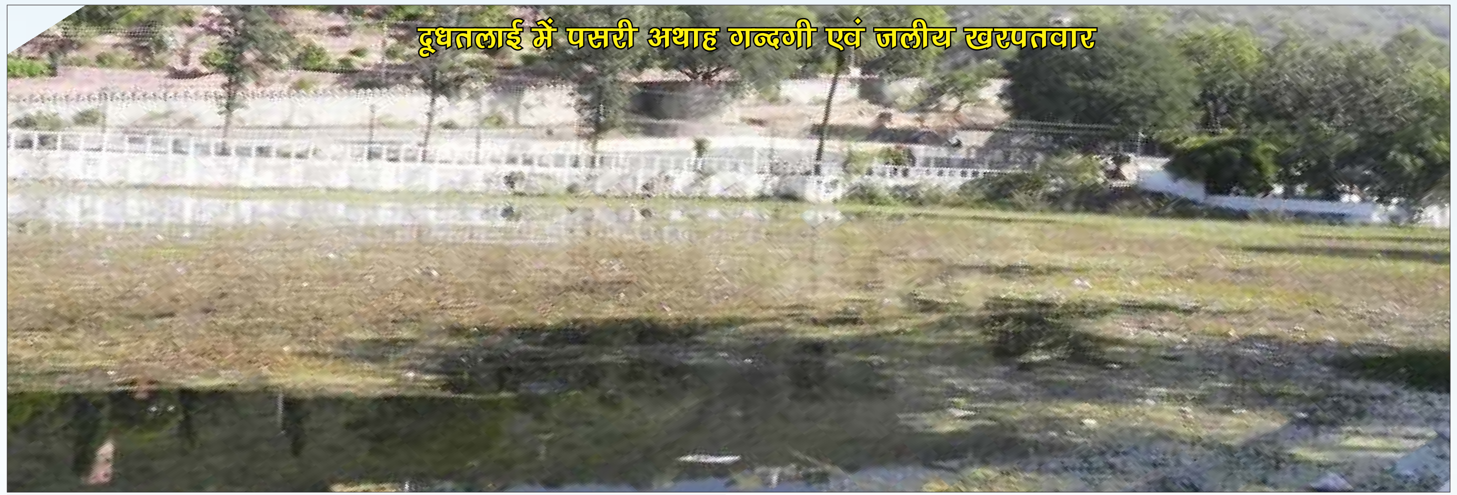

दूधतलाई में पसरी अथाह गन्दगी एवं जलीय खरपतवार

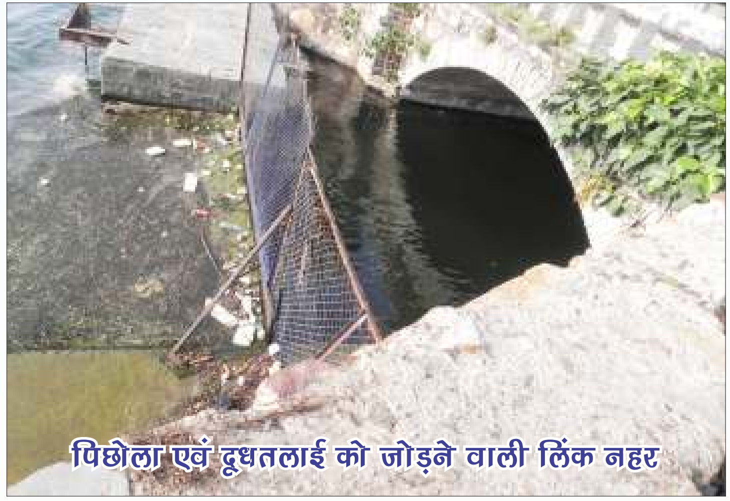

पिछोला एवं दूधतलाई को जोड़ने वाली लिंक नहर

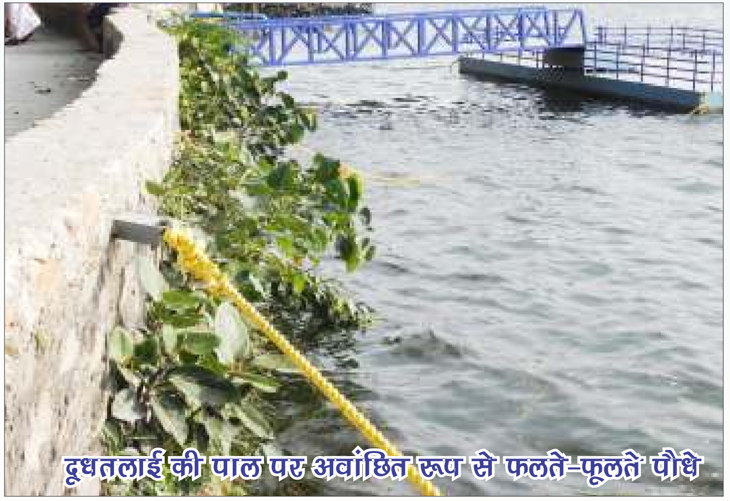

दूधतलाई की पाल पर अवांछित रूप से फलते-फूलते पौधे

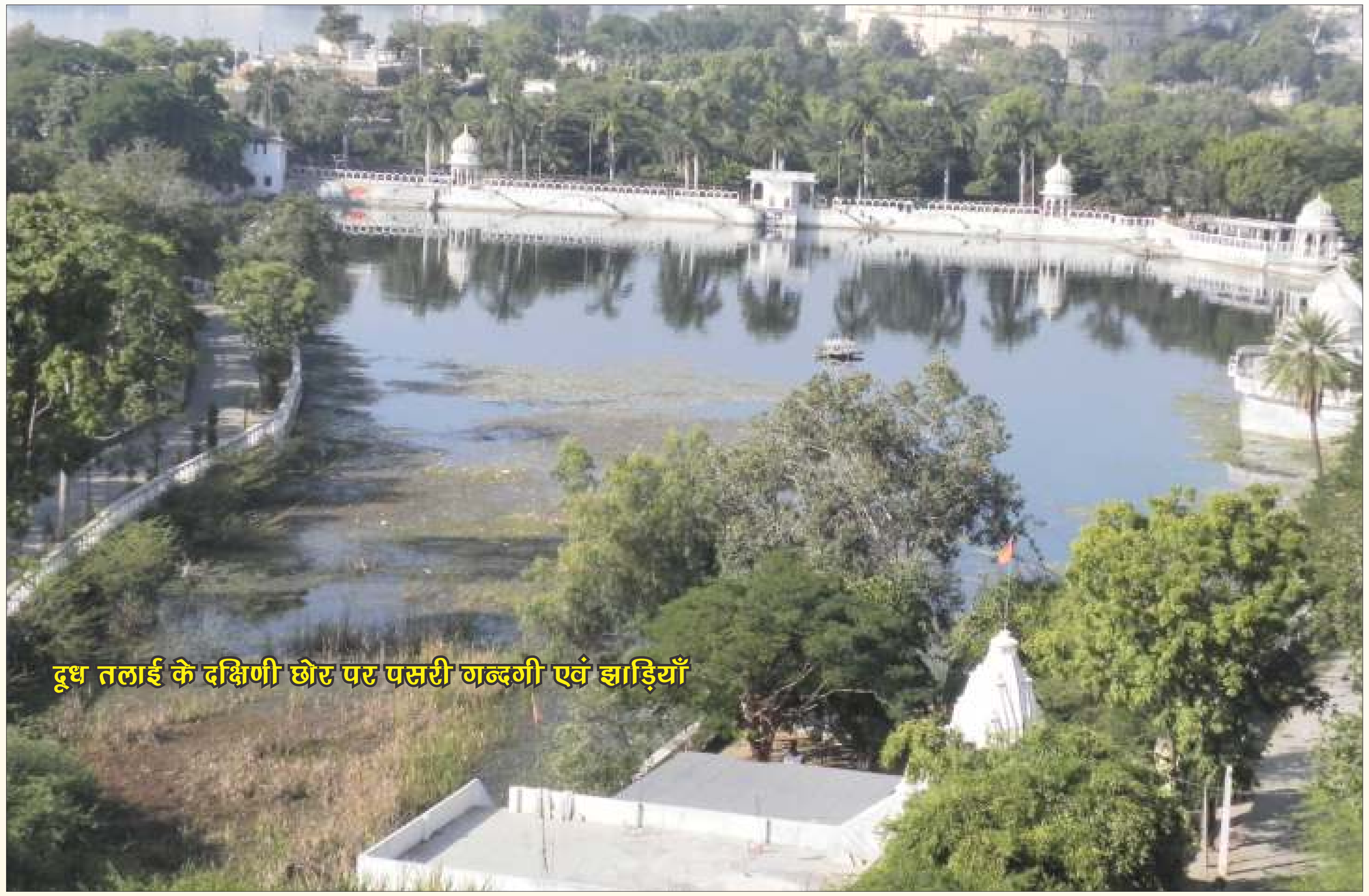

दूध तलाई के दक्षिणी छोर पर पसरी गन्दगी एवं झाड़ियाँ

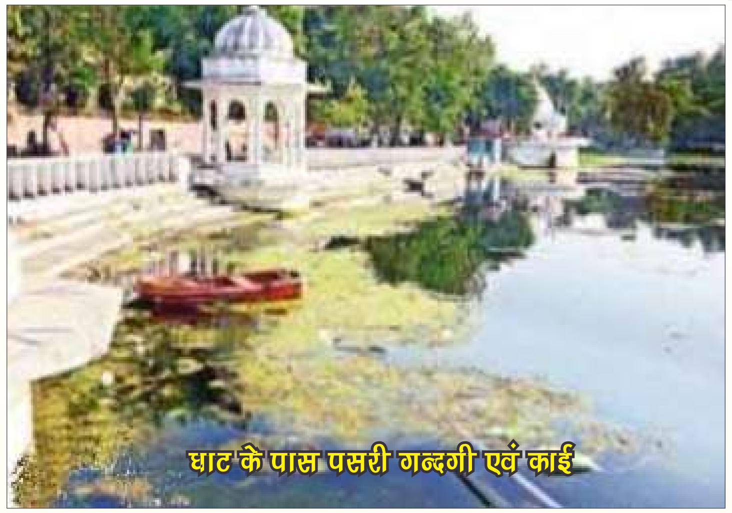

घाट के पास पसरी गन्दगी एवं काई

अव्यवस्थित रूप से संचालित खाद्य सामग्री के थैले

समीक्षा एवं सुझाव

- दूध तलाई उदयपुर शहर का एक सुन्दरतम् पर्यटन स्थल है। इसके नियमित रख–रखाव के अभाव में जलकुम्भी, जलीय घास, काई, वेस्ट प्लास्टिक आदि तलाई की सतह पर प्रायः देखी जाती है।
- नाव संचालन हेतु बनाई गई जेटी को और अधिक सुन्दर एवं सुविधायुक्त बनाया जाकर यहां पर नियमित नाव संचालन होना चाहिये।
- साथ ही नाव संचालन व्यवस्था के अन्तर्गत एक व्यवस्थित टिकिट बिक्री स्थल का निर्माण किया जाना भी उचित रहेगा।
- इसकी पाल पर अवांछित पौधे एवं झाड़ियां फैली हुई है, जिसकी रोकथाम के उपाय आवश्यक है।
- दूध तलाई पर बने पार्क के किनारे बनी पिछोला जेठी के पास दीवार पर अवांछित पौधों की समय–समय पर रोकथाम करते हुए इस स्थान को अधिक विकसित एवं दर्शनीय बनाया जा सकता है।
- दूध तलाई एवं पिछोला लिंक ब्रिज – दूध तलाई से पिछोला तक छोटी नाव का संचालन संभव है। वर्तमान अवरोधों को हटाकर इसे विकसित किया जा सकता है।
- दूध तलाई पर बने पार्क के पास अव्यवस्थित रूप से थैले संचालित किये जा रहे हैं, जिन्हें व्यवस्थित तरीके से स्थापित कराने के साथ खाद्य सामग्री की गुणवत्ता एवं सफाई के बारे में भी पूर्ण ध्यान दिया जाना चाहिये।

रामपोल धरोहर दर्शन (रामपोल हेरिटेज ट्रेक) : दूध तलाई के दक्षिण में रामपोल वन भ्रमण ट्रेक स्थित है। दूध तलाई के पास स्थित प्रवेश द्वार के माध्यम से गहन वन क्षेत्र जिसमें बाँस, नीम, बबूल, यूक्लिपट्स आदि पेड़ आच्छादित हैं, के मध्य आड़े–टेढ़े पगडंडी मार्ग से वन हनुमान मन्दिर के पास होते हुए करीब 500 मीटर की दूरी पर स्थित विशाल शहरकोट के साथ राम पोल स्थित है। रामपोल के वास्तविक स्वरूप को देखने पर परिलक्षित होता है कि यह पोल उदयपुर की सुरक्षा की दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण थी एवं यहाँ से शहर कोट के साथ एकलिंगगढ़ तक सीढ़ियों की सीधी चढ़ाई है। ऊँची पहाड़ी 'माछला मगरा' पर निर्मित एकलिंगगढ़ मेवाड़ की राजधानी उदयपुर शहर की सुरक्षा के लिए अति महत्त्वपूर्ण स्थल था। यहाँ पर पर्याप्त सुरक्षाकर्मियों के साथ वॉच टावर एवं विकसित तोपखाना रखा जाता था। एकलिंगगढ़ को भी इसके मूल स्वरूप में लाने के प्रयास होना चाहिये। पर्यटकों एवं शहरवासियों को विरासत में मिले किले एवं इसकी विशालता को देखने का अवसर मिलना चाहिये। रामपोल के दूसरे छोर की ओर भी वन विभाग द्वारा संरक्षित गहन वन क्षेत्र है, जिसके अंतिम छोर पर वर्तमान में भारतीय थल सेना की एकलिंगगढ़ छावनी

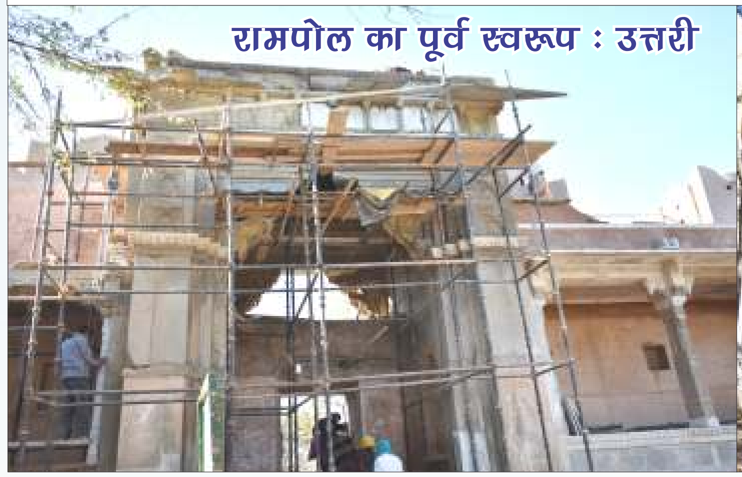
रामपोल का पूर्व स्वरूप : उत्तरी

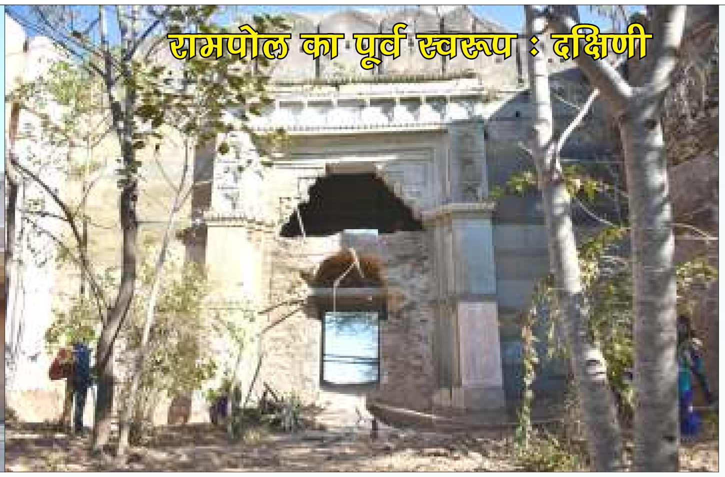
रामपोल का पूर्व स्वरूप : दक्षिणी

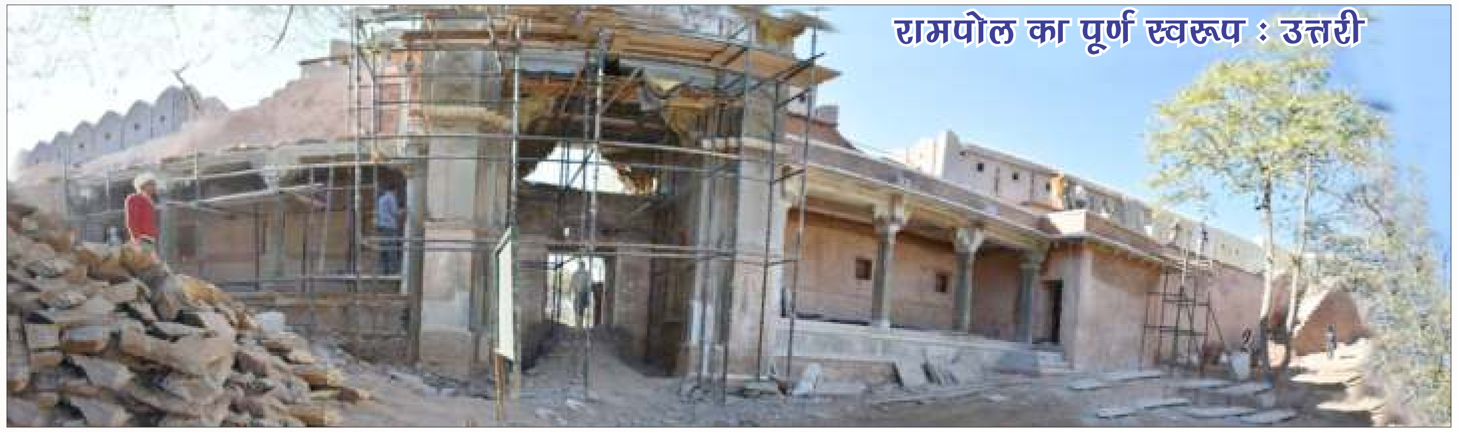
रामपोल का पूर्ण स्वरूप : उत्तरी

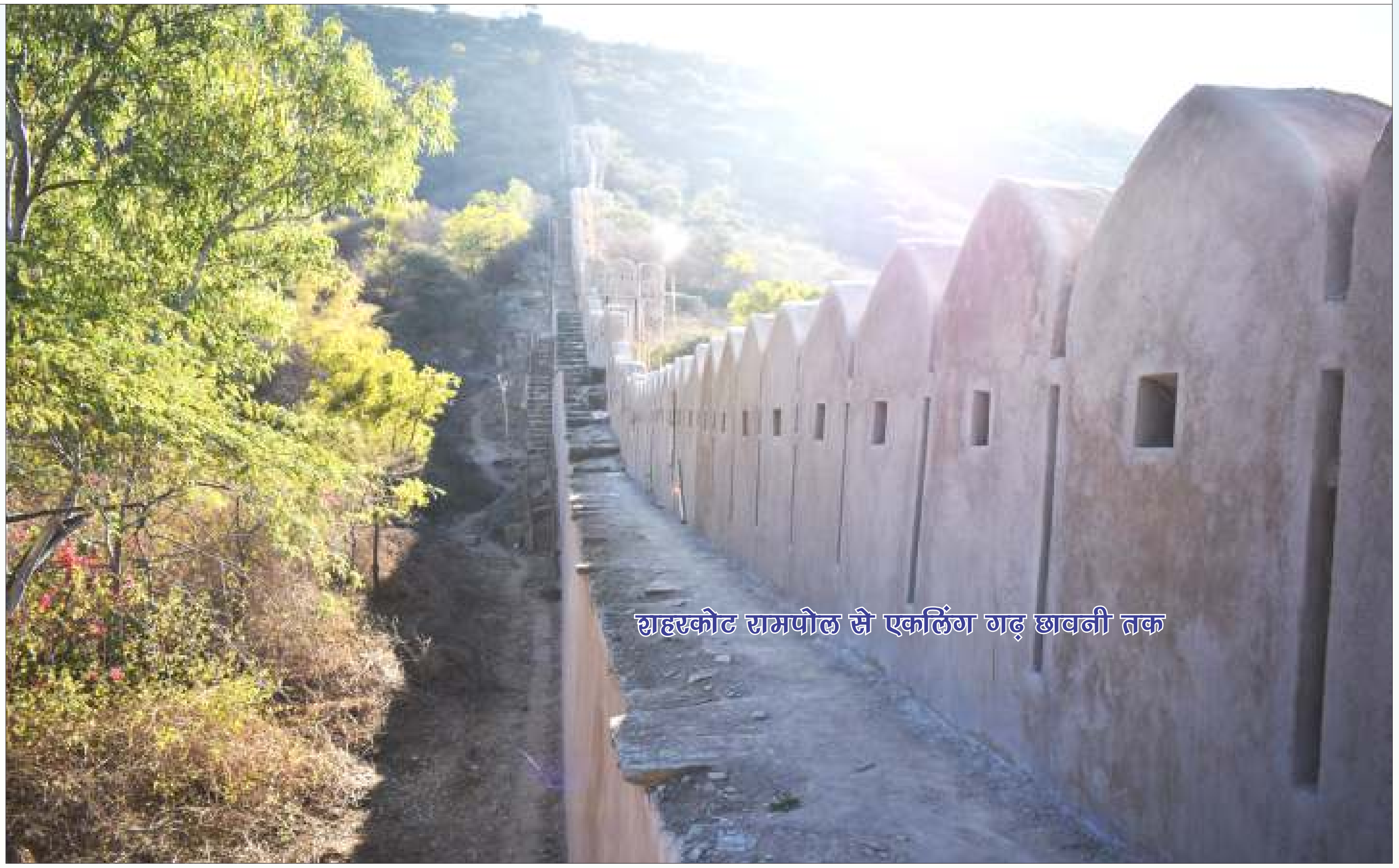
शहरकोट रामपोल से एकलिंग गढ़ छावनी तक

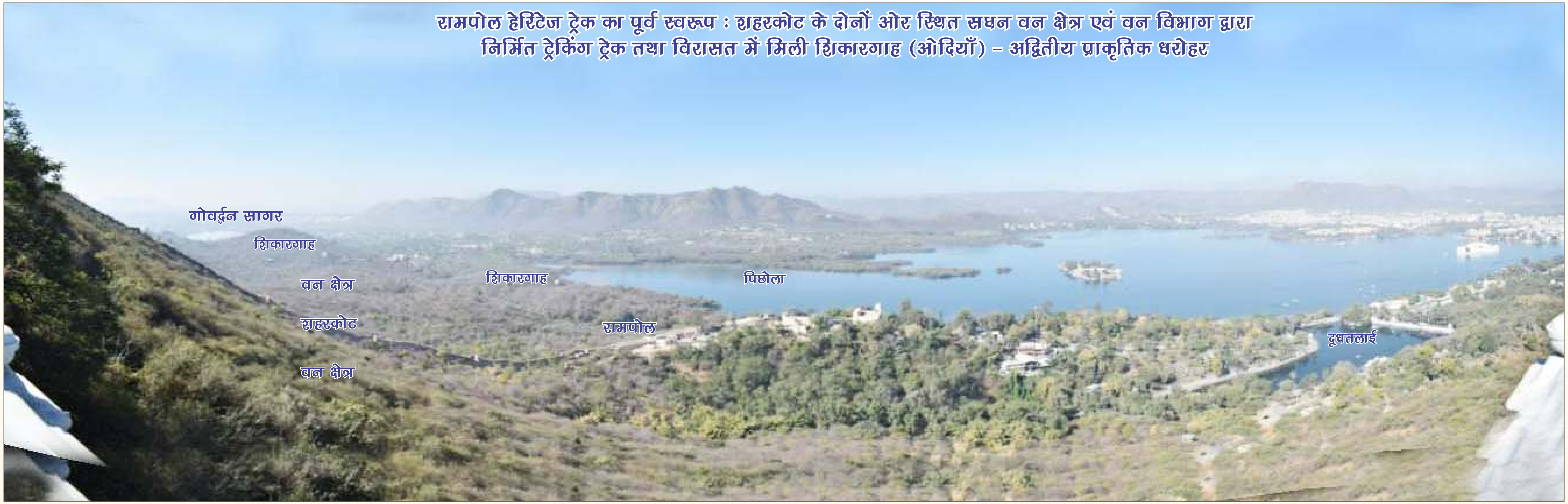
रामपोल हेरिटेज ट्रेक का पूर्व स्वरूप : शहरकोट के दोनों ओर स्थित सघन वन क्षेत्र एवं वन विभाग द्वारा निर्मित ट्रेकिंग ट्रेक तथा विरासत में मिली शिकारगाह (ओदियाँ) – अद्वितीय प्राकृतिक धरोहर

विकसित की गयी है। माछला मगरा के पश्चिमी ढ़लान एवं इस वन क्षेत्र में अनेक छोटी–बड़ी ओदियाँ स्थित हैं, जहां से राजा, महाराजा, सामन्त एवं उनके मेहमानों द्वारा व्यक्तिगत सुरक्षा के साथ जंगली जानवरों शेर, चीता, सूअर आदि का शिकार मनोरंजन स्वरूप किया जाता था। दूध तलाई के दक्षिण–पश्चिम छोर पर स्थित पं. दीनदयाल उपाध्याय पार्क के पीछे जलदाय विभाग की पानी की टंकी के पास से गुजरते हुए रामपोल तक हरियाली युक्त हरे वृक्षों से भरपूर ट्रेकिंग पार्क तक भी पहुँचा जा सकता है। रामपोल वन भ्रमण ट्रेक प्रकृति के मध्य रहने के लिए युवाओं की पसन्द का एक उपयुक्त स्थल है।

रामपोल के दोनों तरफ सैनिकों के रहने एवं पहरे के लिए तबारियाँ एवं कमरे बने हुए थे। इसके ऊपर सैनिकों द्वारा दूर क्षेत्र एवं द्वार पर आने वालों की निगाह रखने हेतु समुचित स्थल भी बने हुए थे। वर्तमान में रामपोल, तबारियाँ, शहरकोट आदि खण्डहर के रूप में परिवर्तित हो गये हैं। दरवाजे के स्थान पर लोहे का एक छोटा सा गेट लगा दिया गया है। स्मार्ट सिटी परियोजना के अन्तर्गत इन सभी स्थलों के वास्तविक पुरातत्व स्वरूप का पुनरोद्धार करते हुए इसकी पूर्णता से मरम्मत हो रही है, यह कार्य प्रशंसायुक्त है। पोल के मूलस्वरूप में बड़े–बड़े लकड़ी एवं लोहयुक्त दरवाजे होंगे, अतः वर्तमान में प्रगतिरत मरम्मत कार्य के अन्तर्गत भी उसी अनुसार दरवाजा स्थापित किया गया है। भ्रमण ट्रेक के प्राकृतिक स्वरूप को बनाये रखते हुए उसे सभी मौसम के अनुकूल एवं सुगम बनाया जाना चाहिये। शहरकोट की चढ़ाई युक्त सीढ़ियों की पूर्ण मरम्मत करने के साथ लोहे की रैलिंग भी लगायी जानी चाहिये जिससे एकलिंगगढ़ किले तक पर्यटक एवं शहरवासी सुगमता से पहुँच सकेंगे। यहाँ से एकलिंगगढ़ किले का पूर्ण भ्रमण, तोप वाले बाबा की मज़ार, करणीमाता मन्दिर, शहर का भव्य स्वरूप देखते हुए सीढ़ियों अथवा रोप–वे के माध्यम से नीचे उतरकर माणिक्यलाल वर्मा एवं दीनदयाल उपाध्याय पार्क, दूध तलाई आदि स्थान पूर्ण आनन्द एवं मनोरंजन के साथ देखे जा सकते हैं। विरासत में मिले एवं प्रकृति को समर्पित इस महत्त्वपूर्ण ट्रेकिंग स्थल तक वन प्रेमी पर्यटकों को अवश्य जाना चाहिये। इसके रखरखाव में उत्तरोत्तर वृद्धि अच्छी गुणवत्ता के साथ की जानी चाहिये।

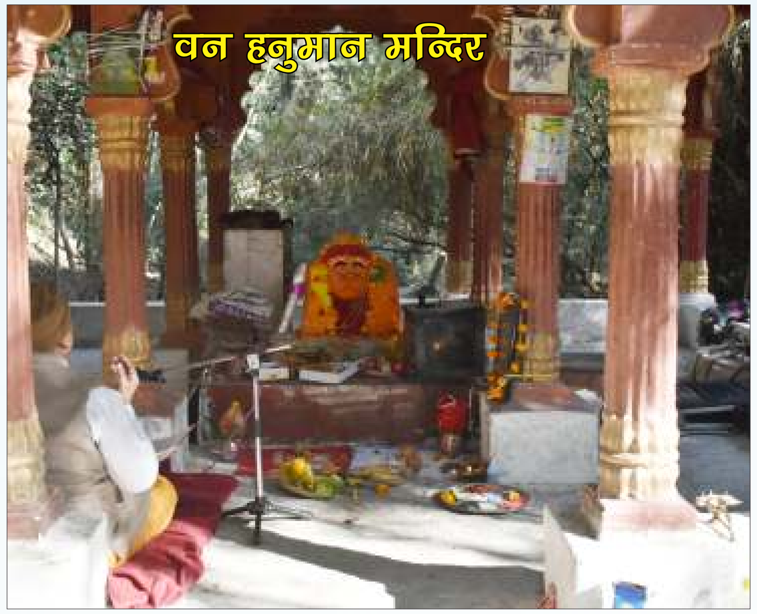
वन हनुमान मन्दिर

रामपोल का उत्तरी छोर – गहन वन क्षेत्र

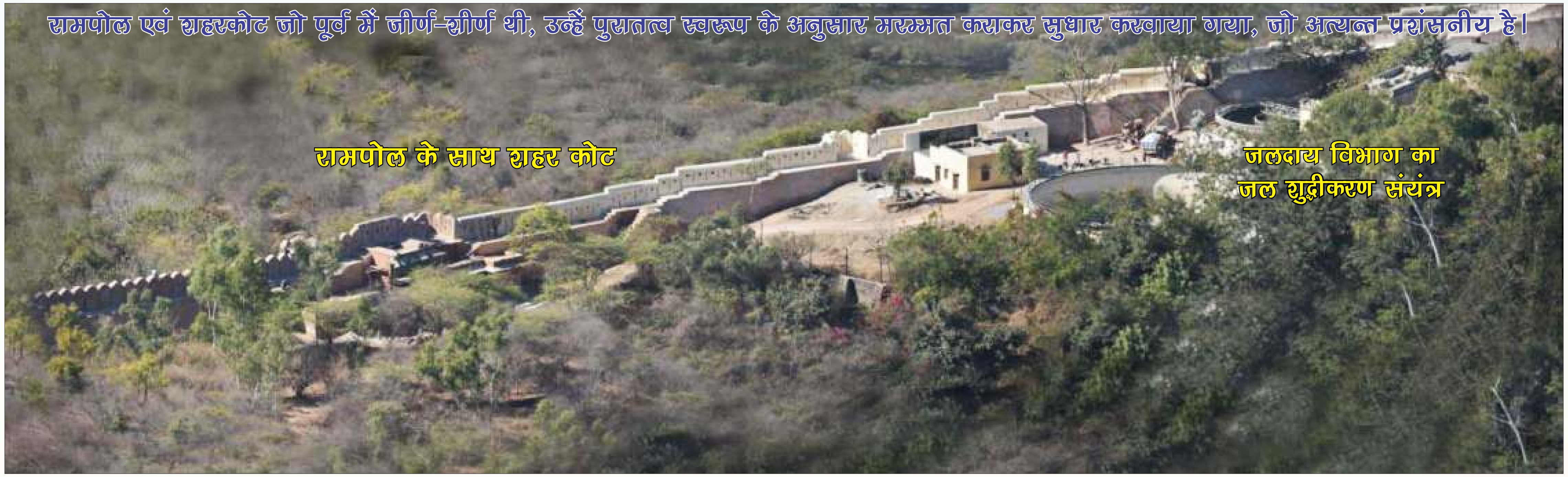
रामपोल एवं शहरकोट जो पूर्व में जीर्ण–शीर्ण थी, उन्हें पुरातत्व स्वरूप के अनुसार मरम्मत कराकर सुधार करवाया गया, जो अत्यन्त प्रशंसनीय है।

मुख्य रामपोल द्वार : पूर्ण जीर्णोद्वार पश्चात्

मुख्य रामपोल द्वार : उत्तरी छोर : पूर्ण जीर्णोद्वार पश्चात्

दक्षिणी छोर पर गहन वन क्षेत्र

माछला मगरा–उदयगढ़–एकलिंगगढ़ : उदयपुर शहर के राजमहल (राणा मगरी) के दक्षिण–पूर्वी छोर पर स्थित इस क्षेत्र में एक ऊँची पहाड़ी ''माछला मगरा'' सामरिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण थी। यह समुद्र की सतह से 2469 फीट ऊँची है। इसका उपयोग मेवाड़ की नई राजधानी उदयपुर को तोपखाने की नई उभरती सुरक्षा व्यवस्था से लैस करने के लिए किया गया। बड़वा दलीचंद के चित्तौड़–उदयपुर पाटनामा के अनुसार सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण इस पहाड़ी पर ''उदयगढ़'' नामक किले का निर्माण महाराणा उदयसिंह द्वारा किया गया जिससे मगरमच्छ के मुख वाली तोप ''उदयबाण'' स्थापित की गयी।

एक अन्य मतानुसार माछला मगरा स्थित एकलिंगगढ़ का निर्माण महाराणा कर्णसिंह (वि.सं. 1676–84 /ई.स. 1720–28) द्वारा करीब 300 वर्षों पूर्व करवाया गया और बड़ी तोपों को रखने के ठिकाने के रूप में इसका उपयोग किया गया। इन तोपों में दूर तक मार करने वाली और मराठों के आक्रमणों के समय प्रयुक्त बड़ी तोपें **बज्रबाण, शत्रुभंजन** आदि प्रमुख थी। इन तोपों को मराठों के घेरे के समय बड़ी मुश्किल से चढ़ाई गयी थी। मराठों के आक्रमण के समय इस दुर्ग ने नगर की रक्षा करने में बहुत हद तक सहायता की थी। इस गढ़ से मेवाड़ रियासतकाल में दिन के बारह बजे धूपघड़ी के समय से और रात्रि में बारह एवं तीन बजे तोप चलती थी। रात्रि में तोप चलने के बाद बगैर रोशनी के शहर में कोई नहीं फिर सकता था।

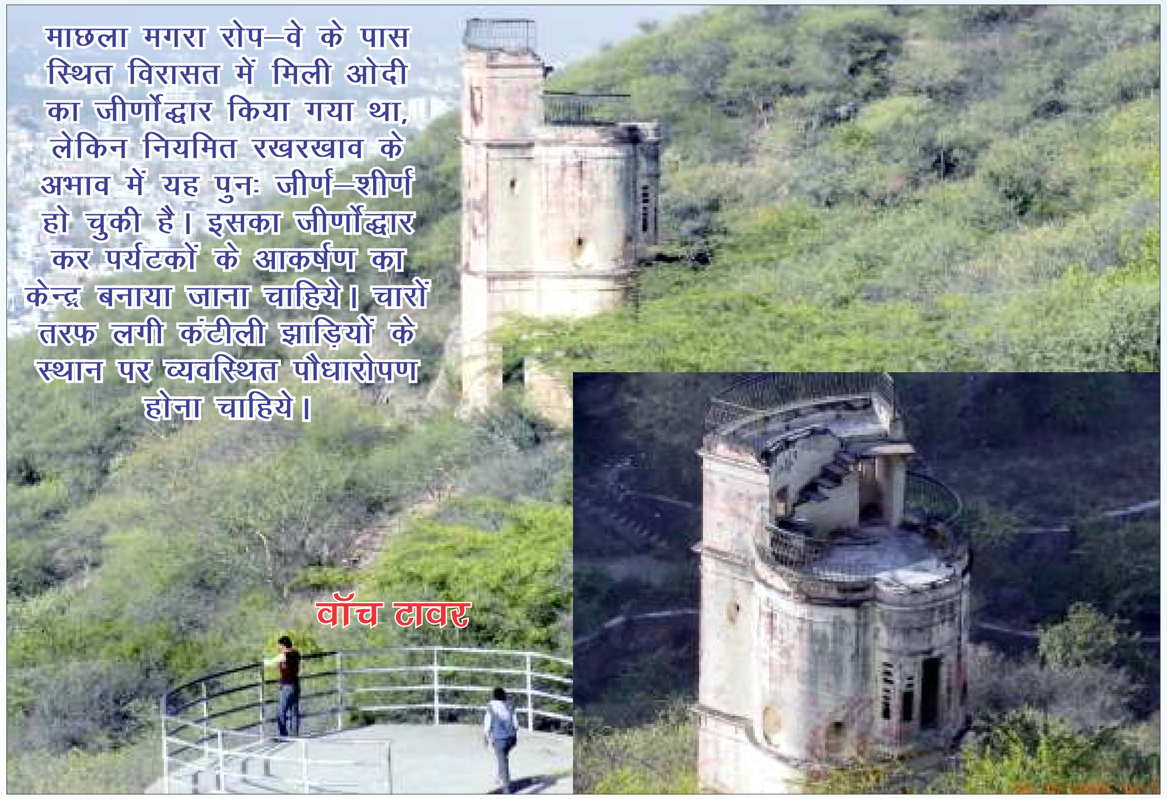
माछला मगरा रोप–वे के पास स्थित विरासत में मिली ओदी का जीर्णोद्धार किया गया था, लेकिन नियमित रखरखाव के अभाव में यह पुनः जीर्ण–शीर्ण हो चुकी है। इसका जीर्णोद्धार कर पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बनाया जाना चाहिये। चारों तरफ लगी कंटीली झाड़ियों के स्थान पर व्यवस्थित पौधारोपण होना चाहिये।

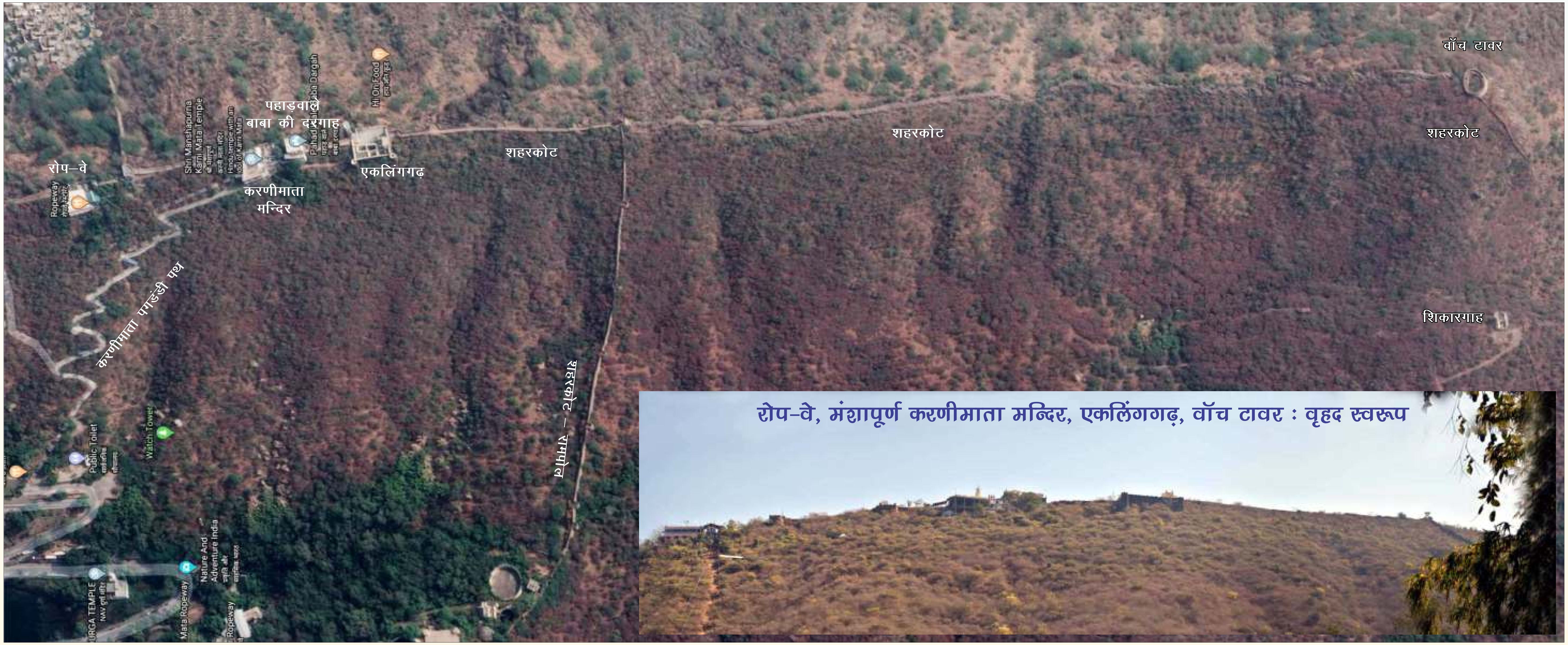
रोप–वे
Ropeway
Shri Manshapurna Karni Mata Temple
पहाड़वाले बाबा की दरगाह
Pahadi Baba Dargah
Hi On Food
करणीमाता मन्दिर
एकलिंगगढ़
शहरकोट
शहरकोट
वॉच टावर
शहरकोट
करणीमाता पगडंडी पथ
Public Toilet
Watch Tower
शहरकोट – रामपोल
शिकारगाह
Nature And Adventure India
DURGA TEMPLE
Mata Ropeway
Ropeway

रोप–वे, मंशापूर्ण करणीमाता मन्दिर, एकलिंगगढ़, वॉच टावर : वृहद स्वरूप